



आर्य समाज

1936

I

ASHA ARCHIVES

[illegible]

गमगुणसापदवानिष्ठनिदानसिंलम्भनिष्ठस्वतन्त्रागविनिष्ठयोर्यो॥
 ॥ नानातनुविहीनानोऽरिषमास्यमधसा॥ सुखेविहाराभासं
 मयमवतविषयि॥ ॥ निदानेपूर्वरूपां नोऽरूपात्पूषणयस्तथमप्रा
 पिच्छनिविहानेऽनोका नोपेवधस्तनै॥ ॥ निमित्तरुत्तायतनेषुम्वया
 कानकावले॥ निदानमादूषय्याथैवायुपंजनवक्रग॥ ॥ इति सूत्रं
 मयादोषविशेषनानिष्ठितः॥ सिगमवक्रमत्यन्तागुयाधीनांम
 यथायथं॥ ॥ तदवयवकंतातिरूपमित्युक्तिधीयते॥ संस्कारनेव

मा

२

गने सिंगे बगने विद्रा मा कति ॥ ९० ॥ हनुवा विविपयसं विपयस्य साध
का विसे ॥ जे पक्ष ने विद्रा मा सं मययाग सुखी वेहं ॥ ९० ॥ विद्यादयनयं
या धि सहि सा ल्य मिति ह्मे ॥ विपा वी का न्प मया व्या ध्य सा ल्य मिति
ह्मे ॥ ९१ ॥ य ध्म दृष्ट न दा धन य ध्म वा न्नि स र्प्य ते ॥ नि वेहि सा म य
सा सो स प्रा पि गी ति ना गी ति ॥ ९२ ॥ सं ख्या वि क ल्य प्रा ध न्य व ल का
ले वि ह्य ष ग ॥ सा हि य त य ध्म ये व व ध्म ने धो र्क ना न्ति ॥ ९३ ॥ द धा
नां स म व ता नो वि क ल्य सा म क ल्य ना ॥ सा ते तु क न ते ग्रा खं व्या ध्य प्रा ध

२

न्य मा दि ॥ ९४ ॥ ह ला दि का ह ला व य वे र ला व ल वि ल्गा ष ण ॥ न के दि
न तु तु को लो व्या धि का ना य ध्म व ले ॥ ९५ ॥ न्ति प्रा की नि दा ना र्थ सा
व्या स ना प दि स्य ते सर्व षां म व ना ग्म नां नि दा ने क पि ता म ला ॥ ९६ ॥ म
शु का य स्य गु प्रा कुं वि वि धा दि त स व सं ॥ नि दा ना न्द्र क वा ना ल्गा ना ग
सा प्प प ल न्ते ॥ ९७ ॥ न य ध्म न सं गा वा ड क पि ता न्द्र दी र्थ ते ॥ न क
पि ह्मे न्द्र का लो ध्म स ध्म य व जा य ते ॥ ९८ ॥ श्री सा हि द ध्म ज ० ने ॥ १०
वा र्क र व द ॥ न्द्र का लो ध्म न्द्र का लो ध्म स ध्म य व जा य ते ॥ ९९ ॥

मा

गोप्ययादध्यकागकागमस्तेजायककयः॥कयनागस्यह तुल्येऽभय
ममप्यपज्ञायन॥१०॥कपूर्वकवसावागमपममहचयकाविनः॥कमि
दिनागनागस्यह तुल्येऽपसायति॥११॥नप्रसास्यतिद्याप्यम्याह तुल्येक
नरविचः पुवेककनसा नृत्तं दृष्टं नद्याधिगंकना॥१२॥पुकागपविच
ह लो रुथवा न्याससं एकागनागसा यत्ननसहैयेविद्वहिहसिहि मुरुमा
॥१३॥हानव्यावकनकायं कनादीनां विनिव्ययः॥दजापमानसैकद्वन्द्व
निव्यससहैवः॥कनाहृषापयकद्वन्द्वसंघातागदुकस्यना॥१४॥मिथ

३

हवविहानस्यकाखाकोऽङ्कोनामकाययाः॥वहिर्निवस्यकाकाग्निः
नदास्यनकागमः॥१५॥स्यदावनाधः संतापेसकागग्रहमेकथा॥यग
पयनतागसुसहविपदिम्यते॥१६॥ममनतिविचर्तुल्येवेनस्य
नयनप्रवः॥१७॥कद्वन्द्वमपिःमीतवातागकादिषु॥हृदोगमद
गुनतागामहवाविहसः॥नृप्रहर्षेवमीतंयहवपूवम्यतिद्वन्द्व
॥१८॥विषुसहप्रमदीनां वनावनपतिविषुः तवनामसहप्रन
कमानुस्वीनुषकाहति॥१९॥नृयतामेतन्मविन्दनामीशान

मा

हेषजानसुनिसकनानागमसंसेवदाम्यहाआदित्यदायदीविष्णुदल
 पानिर्महम्भनं॥पवेनानुयसनेनिसंवाधिसुसविनासननसायनं
 सिद्धानादवानाममृगापमं॥स्वदहास्येननागनांहेषधमिदमसुग
 धंन्वेननिर्दिवादासु॥कासिनाद्रुसुथासिनी॥नकुलसहदवम्भसुकेगया
 धिघानका॥वलात्वमेवीवप्रुम्भनुदम्भसहदग्नेया॥श्रुतस्यनागनासाय ४
 प्रणक्रावपावक॥विषम्भीवृक्षगहनमिखिनम्भवलनवाविम्भरुसएवा
 कनकककंदसमाधिना॥कनकाकयसुहानेनजडावेकाग्भपस्यवा॥भम्भ
 सिरुसवीर्येनएवत्वमृगमोषया॥उनमोहगवगहेषकनाजमहेषक

हेषकहेषकमानहेषकमहारेषकस्वाहा॥मरुपपटकासीवदनादीचनारा
 नेप्रिममीतीकलंदयासिपाभकनसांतय॥॥उलापपटकासाकीचंदना
 मधुकीमिता॥मीतांवृष्टसमापीतीवातपिहिककाप्रके॥॥वातिकेसफना
 पुंखनवनाईवपिहिक॥॥पुष्पिकदादभहनकागपाकीनियकृति॥॥
 कनग्भगुष्टमूलयाधवनीजीवसाहिनी॥नक्षत्रयासुखी॥खीर्यकायस्य
 पशुन॥॥नाजीवरुमनकापकुलोकासर्पयागति॥॥वपथुर्विखमा
 वजाक॥॥पुष्पनिष्ठापनी॥निजानाग॥कयासीरागमगासनोक्रमवव॥

शिवाक्ष भ उ नूकवकु येन स्वी गभ उ विरू कवा ॥ गूलाध्वाने दान्तेन च तव स्य
 निलकं कन ॥ ॥ गुह्वरी पिपली मूले नागने वति तस्मी ॥ वातकन पाच
 नीये विस्वाश्वानिनेहिनी ॥ ॥ गुह्वरी सानिवाडा काग तप्या पुनर्नवा ॥
 वातकन हर्न सिद्धि कवा यं गुह्वरी ॥ ॥ संधान धन नाना गन लभ द्रुवा ॥
 प व्यायाम वायु ककु निक कखाय नूके विनाय वायु तयली घन लभ कामि
 कने वात ४ प्रकाप मप्याति घना व मे वा ॥ **॥ वात पूर्व रूप ॥** पानूक संकोच
 न नाद हं वा ४ धाम लर्म गम्यथ वेष्ट रं वा ॥ ॥ हफत्व री गत्व खनत्व लभ स्वा ४ क

मी शिवा याः प्रवद निगहा ॥ ॥ स्तिरधर्षु लिन्न वृक्ष वानिल वन स्वाद्य महेला ग
 दा स्नाना लं ऊन व स्तिमान् समदिना संवाह नान्मर्दन ॥ सहस्रद ति नूहन स्व गमन
 क्षहाप नाहादिकी ॥ प्रा नाहान विहान हे षड्मिर्द वात ४ प्रगम कीनयत् ॥ ॥ कलिं
 गका क मं डूक ग तिपिल प्रकापन ॥ वगसी द्वा तिसा नथ निद्रा नस्य गथा व मि ॥
 की ल्धो मूरव नाग मनी पाक ४ सुद द्य जाय ग ॥ प्रलाधा वकु ककुका मूर्च्छा दाहा
 मदस्त्व पा ॥ पीत विष्म पुन तुर्ल्ये लिंकु म उ वव ॥ **॥ पिद निदाने ॥** किना गति
 कां द्राका व की वना मनकी रुले ॥ कन घ्नं गसि वे सूरं पावनी धे लिंकु कने ॥ ॥

मा

सहापदहसि मित्रलभरवीउत्सकसंघातवित्रक्रियाशुकरुस्यकर्माशिवदतिगह्यः
॥ ॥ नृकृतात्रकखायनिककणुकव्यायामनिशीवनी मीसबाधनियद्वजाम
नरुलकीजापदाघातने ॥ धूमाग्न्युगिनाविलेकवमनस्यदापवासादिके ॥
पानाहानेविहानेतेषुमिदंशुष्माशमूगूनयत् ॥ ॥ सुलाभ्यवपलाज्येव
कथितावातपिरुजा ॥ मूकः ४ सर्पगतिर्नाडी मूकवर्गवतीतथा ॥ वातपिरुद
यार्हताप्रवदन्निविरुद्धा ॥ ॥ हृष्टमूर्च्छा उमादाह स्वप्ननामः गिनात्रु
कंथास्यभखावमथनामहर्षानूविरुमः ४ पर्वहृदस्थहंलाभ्यवातपिरु

दानाकृति ॥ ॥ कुरुकंभत्रिवाडाका मधुकंदनात्यत्र ॥ कास्मत्रिमधुकंलाधु
पिरुलापप्रकठात्र ॥ वनालग्नमृतेत्रु वन्दनामीत्यपर्वते उपकृत्यावकीयत्र
कस्यायं वपिवरुत सर्वरुदधिनकं च वातपिरुद्वनंरुथत् ॥ ॥ वासकं पिरुला
लादीर्घवनापूनर्नवा ॥ वलात्रेति सिकातुसं मधुना वातपिरुद्वत् ॥ ॥ ॥
दृष्टारवेनादी मन्दास्यात् ॥ ॥ अवातजागुजं गमदिगतस्तन वाकहंसगतिप्रहा वात
असमरुताप्रवदन्निविरुद्धा ॥ ॥ ॥ मिष्टं पर्वनां रुदा निन्दा गेनवमवत् ॥
गिनाग्रहः ४ प्रतिस्था ४ काठा ४ स्वदप्रवर्द्धनं ॥ संतापामधुगववातस्यभक

५॥

याकहुलाहिनी ॥ बाहुर्हडमिति रघुनी या नपिरुह नानृत्तम् ॥ ॥ बाहुर्हडमरु ॥
लबीगककासमृगीनवन्दनी उगभवहुर्जातकथाषमृत्युसे ॥ विडीनकृष्णगुणप
प्रकठानीनगीसविस्वननदसहामृना ॥ कर्पूत्रजातीरुलहिगनाऊकैतितासृ
तावीसमभवसृष्टिनी ॥ सत्मावनीपावनमग्निर्वधनीवनप्रदहकृष्टिदाषमृत्युसी ॥ १०
उनाविवंधं हृदयं गोलग्रहं सकाशरहिका दानयस्त्रिपीनस ॥ ग्रहस्थतीसान
गलग्रहावर्दीनिहनिगुल्माकूगईसकामिनी ॥ ॥ घृतेनजुंकीगुटिकीप्रकर्व
नसलेहकय्यान्मधनापयायने ॥ सर्वगदाहकिचदवहुनीमकिंपदपृथपवि

प्रदहं ॥ **कुरु सर्वमदि** ॥ ॥ सीतादादक्रियपात्तवृद्धिशीर्षगसग्रह ॥ ॥ दाहा
नली तलावाद्ये निधीवः करुपितया ॥ ॥ हिका प्रमीलकः स्थाननिद्राकं ० प्रगा
पक ॥ ॥ कुर्यान्नीधसीरुदा वदनतिकता घृता ॥ ॥ करुपितात्मकं चेतनं नृ
नैरुक्तु साहिर्न ॥ ॥ पतानपिबु मर्दच क्रिस्तामधूर्क वना ॥ साधि तायेकरवा
यस्मात्तिरुष्टमकनघ्व ॥ ॥ **विद्यापनादा** ॥ ॥ जवंगपोस्कनेही जी जानी रुले
तलावरी ॥ माकाका गुनूक श्रुत वर्णाग्रकर्व दनी ॥ नागाकदानपाउ ला रा र्कनाष्ट
गनामध ॥ आशुनैकरूपिकानी सन्निरागतकना पह ॥ **विदुष्टाधिकया** ॥ ॥

मा

कृत्वा लभज ० २ दाह कटी वस्त्रा पृथीवने ॥ ॥ मिना लभेन वसन्तस्य निद्रा मिती
नानूजा ॥ ॥ मन्वा लीह प्रवाति सुत प्रापार्थ विनिग्रह ॥ ॥ सन्निपात मकय्या
रथ क रुवा तात्त नाग वत ॥ **सकय्या दय मन्निपातया ॥** ॥ विरुं वमति विस्वा रा
मि पोष्क ना विरुं क मति सुं मिष्टा पिप्प ली सुं ठी विवदात कया नने ॥ **पिप्प**
पिप्प अधिक दिदा घना ॥ ॥ त्व कर्षये व गृक्ष ला नाग क मत्र मवत ॥ पिप्प नी
क रु क सुं ठी कान वी स इ ना ल रा ॥ क रु लं पोष्क नं सुं ठी सम रा गम नि चूर्ण य रु
सन्निपात दिदा घन का स र्थ म ग ल गृह क ० ना ला च हि क्का या म ध ना घा द

११

मिती ॥ **वाग पुष्पाधिक सन्निपातया ॥** ॥ मूर्च्छा अनिर्घना हि क्का रु द्रा दा हा वन
क्रम ॥ ॥ दुर्ग सादा निद्रा च स्मृते नी गु ठ नि मि ती ॥ ॥ पर्व मूर्च्छा प्रसाप
पु विन्म पुष्पाधिक सन्निपातया ॥ ॥ पी ठिता दृष्ट नं मूर्च्छा वसि हर्ष प्रसादन ॥ ॥
दहा या स ग स दहा दर्शन स्य च निग्रहा ॥ ॥ ॥ मिता निरुद्ध न कार्थे तु सन्निपात नि
ल स्व न ॥ ॥ **विस्व न क सन्निपात न क्रम ॥** ॥ विरु ला जाय माने व गु दू वी सा
धि ती ऊ ले ॥ वाग कर्ष न सन्निपात क र्थ य प्र न स्य ते ॥ ॥ **वाग अधिक सन्निपात**
वाहि न क व ला दाह ० मी त या ग क र्थ नि लो ॥ ॥ कृन्त ० क पि ते स्य स हि क्का का

मा.

न समीपकां ॥ ॥ परवर्तका विदूषी वप्र जावा लभेन वावमः ॥ ॥ तारिपा लघ्वेन
वृद्धि स्तु ॥ सिद्ध ॥ प्रवर्तक ॥ ॥ ॥ अतात् ॥ ॥ अति नैवृद्धि गूल्यस्य सत्त्वात् ॥
अहं धातुन जिव प्रे ॥ पिता र्थगी प्रकाशित ॥ ॥ संज्ञा नी तै ह नादाहा रुद्र
हं मधना स्यात् ॥ ॥ अत्र ॥ अत्र वा लभ्य ॥ लुप्ता निष्ठी वने रुद्र ॥ ॥ अत्र ॥ ॥
मूर्च्छा वमि नष्ट ॥ दृष्टि दा क ॥ अति ग्रहा ॥ ॥ करु निग्रह ना स्थि र्द कर्प्य सा
पडवा हने ॥ ॥ पितृ स्या निग्रह मूर्च्छा मधम क्रान्ति ॥ ॥ अति ॥ ॥ विदु
दवाहिना यामै रुद्राह न्य पवा सत् ॥ ॥ अत्र वे सा पति शु के वा विना उ ने वजी

वति ॥ ॥ रुद्र कलाधिके नृषी सन्निपात रुद्र कला ॥ ॥ **कर्त्तृ नाम सन्निपात**
किञ्च मध्यधिका ॥ कर्प्य दात पितृ कला क्रमात् ॥ ॥ मध्यदाह दाना निष्ठी स्वय
गूल्ये वि सी ॥ जिमा ॥ ॥ मन्वा या रुद्र यं की ॥ ० मस्त के वद नृजा ॥ ॥ हिक्ता
रुद्र नवा यु निर्वर्क रुद्र कि सी गति ॥ ॥ समीप के कटो मर्द काशः स्वास
प्रय प्र ॥ ॥ अत्राद्य क र्त्तृ मूल गूल्य म कि गता अपि ॥ ॥ कर्त्तृ नि क र्त्तृ
मूल स्या वि ठिकी क र्त्तृ मूल ग ॥ ॥ अला कृति ॥ सवि रुद्रा विहा द्रव्या क
सिधति ॥ ॥ **कर्त्तृ नाम सन्निपात लक्षण** ॥ ॥ मध्य की सीधिका ॥ यत्र कर्प्य

मा. वाताधिकाक्रमात् ॥ ॥ स्वंस्वंरूपं ससंज्ञावजिष्ठासफावकक ॥ ॥ कष्टकृत्
ननिर्वीव मयंचागककापमं ॥ ॥ पूकपूभूगलतंच पुष्ककः ॥ ॥ सुनालूका ॥ ॥ ज
कदाहागुपुं बावाग्नामंदष्टिनिग्रहं ॥ ॥ सत्रकककनिर्वीव कृच्छ्रास्तोकं मूर्ध्मूर्ध्म ॥
प्रमीलसातकासानी प्रत्यहं पविर्द्धनं ॥ ॥ जनिष्टकामाशुनं पार्श्वानाहकाप
मं ॥ ॥ कुरुस्थकषिज्ञानस्य हृदयादप्रवर्द्धनं ॥ ॥ पार्श्वहनीयथाकारधुमुयने
रिद्यकैर्द्धनं ॥ ॥ लुपककादका नाम सन्निपातसदाग्रं ॥ कका नकसन्निपात ॥ ॥
शक्राकृच्छ्रगुपुं गी कसात्यलकनामिता ॥ मधनासह लहायी डिवावंत्तनि मीरुयत ॥

॥ व्याघ्रकदलकानंता पोष्यामन्नकानवी क्रिस्रंघिसतानीसीपुंकीम
स्तसभावनं ॥ पंचदशंति केनाम मधुना सहस्रहयतू ॥ वातस्यघ्नकनेकागहि
क्राश्यास मन्नाचकी जिदाघसन्निपातधुपार्थगूलसदान्नं ॥ ॥ पंचदशंति ॥
हृदमध्यसहीमामुर्क्युर्वानादयः क्रमात् ॥ ॥ उकषक्राहिघातधु यत्रसिंहा
स्तकंस्तकं ॥ ॥ कन्यमूर्च्छाप्रमायास विनाघानतिमाहर्नं ॥ संमाहकश्चंति
रघ्याते स्मन्निपातसदान्नं ॥ ॥ कदलसंघोघ्ननेपुंकी व्याघ्रानंताचकान वि ॥
मस्ततास्तेस्तकपत्र गूलोलागडकेगरी ॥ ॥ उतानिःशुक्रुहृद्गुनिमधुना

मा

हयहिषक दिदाषसन्निपातं च पार्थिववस्तिभूतिनं ॥ स्वासकाराद्यनं यार्थिहिकास्य
निवातं ॥ बहुदंभं च मिदं यागवत्तु न निधातिता ॥ **बहुदंभं** ॥ ॥ हीनप्रवृत्त
मध्यस्थं यत्प्रवातादयः क्रमात् ॥ प्रकर्षकितानां कैरादं स्वस्वित्वाकितं ॥ ॥ क
रुपितुस्तु ॥ ॥ क्रियावत्क्रादास्तु ॥ ॥ संभवः ॥ ॥ सर्वप्रवातं च संभवात् ॥ ॥ १४
कृतं स्तुतिं ॥ **संभवात्** ॥ ॥ जाक्राविहीतकीमूर्त्तौ च प्रवृत्तकीतिवा ॥ दुःखि
तामागधीर्गुणी भूजाकीकानवन्ना ॥ तालीसं प्रवृत्तकप्रवृत्तानां कानवन्ना
वासा मधुकसानानि उतिर्ननकचंदनी ॥ सर्वनामधुना सहैतत्क्रयस्यातवस्थितं

प्रक्रादिकमिदं नाम सन्निपातं च प्रापहं ॥ वातविहकुरुदाद्यनकपितुवित्वावत ॥
हिक्तात्वा मरुत्वा च हिक्तात्वा मरुत्वा च हिक्तात्वा मरुत्वा च हिक्तात्वा मरुत्वा च हिक्तात्वा मरुत्वा च
ने ॥ ॥ **मरुत्वा च हिक्तात्वा** ॥ ॥ **करुपितुस्तु** ॥ ॥ प्रवृत्तहीनमध्य
स्थं यत्प्रवातादयः क्रमात् ॥ संसंभवां प्रकर्षकितिविजापायासकंपर्त ॥ ॥ मरुत्वा
संतं च मरुत्वा च मरुत्वा माहवतिशमः ॥ सानिपातः सविहकादेशः प्रवृत्तसंभवः ॥
मध्यप्रवृत्तसहीना यत्प्रवातादयः क्रमात् ॥ संसंभवां प्रकर्षकितिसंभवात् ॥ ॥
ता ॥ भूतपाकयकुरुत्वा ह ह ह क्रामात्तादयः प्रवृत्त ॥ प्रवृत्तप्रवृत्तसंभवात्

मा दकेगती नृशो ॥ म माहते नत खेव गायने व विष्णुधत ॥ पा कना क्रमुविष्टे या सन्निपा
 तसदा मृशं ॥ **पा कना सन्निपात ॥** ॥ सुद्धा ना दया य सु खे लिङ्ग समन्विता ॥
 दुर्हाणपनता कुर्यु मूक ना नहु ना दमं ॥ अस्य दत्तं क्रते सह स्रष्टा गत्त विर्लङ्गिता ॥
 जी विते च आहा वंति सं हं यं कृत पालनकः ॥ कृत पान निदं दष्टा व्याहृतं स्य स्रष्टया ॥
 म अद व पि स्र बादि निषा दे र्जा पु धर्व ति ॥ ॥ **तिरु क्त य वा द रा सन्निपात**
म ना कः ॥ ॥ ति दा षं च मृष लि ष्ठ नि डा व क ल्य नष्ट वान ॥ नि ष्ठ न न स नि
 स्वा स मं दा शिव न हानिक मृ शु तु ल्य म हि न्या स सन्नि पात स्ये ल क्रने ॥ ॥ १० ॥

तिका ऊरु व्याघ्री नास्मा विव स वा स क रा न ता शि क ता रे व अ य धि पृ ष्ठा सा मृ ता ॥ स य
 य कं गृ ता हिं तु त न्द्रा हि ष्ठा स र्वा ष मं स नि पात क न प्रं व स्वा स का ग नि वा न धं ॥
मं दा कः ॥ ॥ हिं गु र्द क न ला प री पि ष्ठ ली चूर् धू सं य र्त्त ॥ स नि पात क नं धा री म हि
 न्या सं व दान र्ने ह स्ता र्ध मू न मा ना हं स य ४ पी र्त्त नि य कृ ति ॥ **अ हि न्या स या ॥** ॥
 पु न र्त्त वा गु डू वी वं प्रा य क्ते नं शु वा स क पं व मूल क त र्वा य ल म मू र्त्त न र्त्त र्त्त र्त्त ॥
 न स्यं म न ना ली न्या र्त्त सं डा वा स्या प जा य त ॥ ॥ **पु न र्त्त वा दि ॥** ॥ शि नी ष वी ज
 ल म मूर्त्त कृ ष्ण म नि व सं ध वं ॥ अं ड ना स्या त्वा ल्वा र्त्त स न स न रि ना व य ॥ ॥

या

अहि न्यास साधि पाठया ॥ ॥ नीलात्यल मलीलानिवन्दनं च यमनि वा ॥ निरुध
कषायायुषिर्ह विरुद्धनविनामनं ॥ ॥ **दीप्तासालादि ॥** मूलपर्वत काशीनद
वसानमहोषधं ॥ तिरुलास इनालं ला नीली कापि प्यकं नृपतु ॥ किनातति
कर्कषा अवकाश कनाहिनी ॥ ॥ मधुकं पिप्ली मूली मूला शानन उच्यते ॥ १६
ससाध समनं च विदास प्राप्ति दीपनं ॥ अष्टादंशं गमकं नृपतु यो कनाप
हं ॥ विरुद्धनं सानिपातं दाहं ॥ **अष्टादंशं गमकं नृपतु** ॥ **मूलादि ॥** ॥ विरुद्धनं
साधि पाठया ॥ ॥ नागनापिप्ली मूली विरुद्धनं मूली ॥ इनालं

ववादानकाथः स्यात्तु पिकं दाने ॥ ॥ **नागनादि ॥** ॥ गृणीक रू लतानी भं क
शुमनिवनागनं ॥ कषाजाडी इनालं ला नीली मूलाहली तकी ॥ चरुर्जात कलाशी
चमधूनासह सहयतु ॥ ॥ अष्टादंशं गमकं नाम वातः स्या कनापहं ॥ वि
दास सानिपातं दकासं सगनं ग्रहं ॥ हिक्का नृपतु नाया ती प्रतिस्यायं निव
र्तकं ॥ ॥ **नादि निपाठया ॥** ॥ अहि पाता हिवा नासी मरिषं जा हि सा पत
आगं तु जायक दाघे र्यथस्वीतं विरावयतु ॥ ॥ नृपति पातना वायु ॥ प्रायः
न कप्रदूषकः सव्यथा ॥ अथ व वरु कनाति सनूजं कर्तुं ॥ ॥ **अष्टादंशं गमकं**

मा

विषकर्मसमाधत्तीसावजवच॥ रुक्मानविषिपासानातादश्चसहस्रकृया॥ ॥ओषं
धीगंधकमूर्च्छागिमान्ममधसुधा॥ ॥ कामकविहविशंस तंज्ञासस्यमलाऊन॥
रुयात्पुलापः॥ कश्चरुवल्कापश्चवपथ॥ ॥ **यत्तुयद्यनया** ॥ ॥ भूहि
वानाहिसापासांककुरुषावजायते॥ ॥ कृपादोसर्विकापानंककुरुविहाहनेन १०
यत्॥ निवेदानकखायेवाहिरुं सोमनसं रुधेत्॥ ॥ रुनालिपंगमइर्गमहास्य
शदनकंपनं॥ ॥ कामलभकरुयाद्ययः॥ काधात्येहमुषामला॥ ॥ रुना
लिपंगमरुक्पातिरुतसामान्यलंकनं॥ ॥ सिद्धार्थीउरुलाभिनीसुक

वसं
रुकील्यतावलाधत्कीमंडिष्टान्कनीद्ययं उिकुरुकं ग्धमाववाहैगुय॥ ॥
कागत्वमूयविष्टमगदीसिद्धंयहात्सादनं रुताम्नादविषकनेप्रममनं पानादिति
र्थडिनं॥ ॥ **रुताम्नादकनमा** ॥ ॥ दाषास्याहिनसंरुतकनाडीरुस्य
वापूनः॥ धातुमन्यतमं प्राप्य कनातिविष्टमकने॥ ॥ सतमंत्रसनकरुसा
न्ययः॥ पलजाप्रितः॥ मदावागन्तुकीयाहिभूतिमकृतातः॥ पुनः॥ कुर्या
वातुर्थकंधानंमक्तकंवागसंकर्मे॥ ॥ पटात्तादृष्टातिकाभासिवाहिः॥ गृ
हंकुलं॥ संततारस्यकनदयंवातादीनांनिवर्तुते॥ ॥ **संजय** ॥ ॥ पटा

मा

नानि सुमृदीकार्थमाकं धिरु साहसं ॥ काथनुकाहिकं हनी सर्कनामधुखादि
नं ॥ ॥ नुकाहिककनया ॥ ॥ चंदनाभीनधन्याकं गुडूवीपत्रपर्यटं । स
र्कनामधुनायुक्तं तद्गुदाहनिवानमं ॥ प्रतीयकं कनकाधनकपिरुप्रमचरं ॥
चंदनादिप्रितीयकया ॥ ॥ सिनासामसकीरान् गिवाद्यमहोषधं ॥ मृत्
शीतं जलं दद्यात् ॥ नामधुविमिश्रितं ॥ चारुर्थकं कनकाधनमन्त्रं वैवायुपात्रके ॥
चारुर्थकया ॥ ॥ वास्तुप्रिकुकाजाडीसुवंगकानवीभिवा ॥ नर्कनामधुना
सहशीतघननिवाननं ॥ ॥ वासादिश्रृंग ॥ ॥ पल्लवादमकं वासाश्रृंग

जीपलकं तथा ॥ लवंगमनिचं मुंठी तदघापलमस्तकं ॥ धून्ना पदपल्लवं
गुटिकाकालमिष्यति ॥ ओदनविलिह द्यापिवातविषमकनाक्तकृत् ॥ ॥ वा
तपिरुविषमकन ॥ ॥ दृष्टताधिरुत्तामूर्त्तिपिपलीवासकं मधु ॥ सर्कनाम
धुसंयुक्तं ऐहिकविषमकन ॥ ॥ पिरुविषमकन ॥ ॥ रुलप्रिकाकला
हं नीनीलास्यप्रियंगुका वासकानधुसंयुक्तं विषमकनहनिव ॥ ॥ वा
सादि ॥ ॥ पिरुविषमकनया ॥ ॥ प्रिकुकाधनधुजीवंगकाकनामं च
रुलप्रिकसविठ्ठल जातिवासासमर्त ॥ नधुसमहसलीरुत्पुष्पावर्तविकार्त

मा

विहन्ति व दानः पीतं स्वासकासाऽरुह ॥ ॥ **पुष्पविषमदानया** ॥ ॥ करुपित्वा
रुहकग्राही पृष्ठाया न करुण्यकः ॥ वातपित्तद्विनाग्राही त्रिविधः ॥ स्वागनीयकारु ॥
॥ ॥ वासायी भिरुलं पाथानकवंदनमर्कना ॥ मधुना काथसहायं विषमदान
नामने ॥ ॥ **विषमदान** ॥ ॥ बहिर्विषं जातिरुलं गंवयुलं प्रियाजाति ॥ १२
युगं कुमाने ॥ वासासर्मसुर्लुमिदं दं र्भगं गिनासुलागमपि नाक्रिकेन ॥ पक्व
पयः निरुहकरुनिवाताः ॥ सर्वं तासंधिः ॥ शिग्रसिप्रकाप ॥ अर्भसिधेवग्रहना
मलापहं रुजकिसेहं रिषजाः प्रयागमत् ॥ ॥ **दग्धं वासादि** ॥ ॥

वातपित्तविषमदानया ॥ ॥ पटाक्षमूलमनिचंती तमं रुसिधदि ॥ ॥ गार्कन
मधुना युर्कवमनं पत्रमोषधं ॥ ॥ **पुष्पविषमदानया** ॥ ॥ शिरुसाजाजिकोक्त
पुष्पविषमलीमूककेशर्न सवंताजातिके र्धमा गालीसंच जिजातकं ॥ वंगजा
वासकयुर्कसमरागमनिकाग्रयत् ॥ पित्तपुष्पाधिके र्धमत्सदाहपत्रमोष
धं ॥ कूर्दिमूर्च्छीयमात्सर्वववातपित्तदिदाप्रज ॥ विषमदानपुसर्वपुनासिगस्य
धधस्यर्न ॥ ॥ **पित्तपुष्पविषमदानया** ॥ ॥ र्वदागुसिनामूर्कपथमपि
पनिवासके ॥ कलायं गमयसागुवातपुष्पधनं जयत् ॥ ॥ **वासाजा**

मा

की वंशकी मूलादि रुला लवः इनासला वा सकं व शर्कना मधुना सह ॥ वा न
शेषा वंशका सही ह गूलन तथा वनि ॥ उना घातं प्रति स्थाय विषम घनता मीनं ॥
वावादि ॥ ॥ सागनाली म नी सांगी हि म डी मान ता सु नः ॥ ह सि रु ला ल
यं वाना नायना लम सु नी तथा ॥ मां ती किं डल्ल भा ये व मू सैन सम ता गिके ॥ ॥ २०
शर्कना सु कू सु धु नि मधु ना सह सह ये न ॥ स नि पा त पि दा षं व न क पि रु वि न
व्यति ॥ ॥ प्र ता प मा ह कू डी श्री मूर्छा ल्हा सु सका रा नू न ॥ **व रु र्द य**
जा ॥ ॥ वा मी वा सक शाय मान पि रु ला ता नी म कं पि ले कं ॥ के ला नं स प ट

न ति ल्हा क रु का वे डी य वा प र्थ रं व व्या ला ति दि वा स य न्त्रि क य ना वि श्रा रु वा का म वी
ला जा जा डि वि दि ग दा रि रु रु ता य सि र्म व र्दी प नं ॥ सा द वं ल ड मा द पं व ल व नं दि रु
न हिं जुं तथा पा ल्हा स ल वं रा दं ति नि वृ लं व र्वा क था या गिके ॥ ०० थ रु रु द र्मा प्र मा
स गु टि का पू र्वा क्रि य रु क्रि ता का ला का म वि द म रु नु ग म नी दा ष प्र यं का प डि रु ॥
गु ला गूल द ना सु धा रु म ग मा नू का द्वा म या ना य हा ॥ आ ना हा द न पा लु म ह स
न विं क जा न क्रि मी ना स नी उ वं डि सु वि वं ध ना स न क नि ना ना गू र्जा ना प नी ॥ रु रु
रा रु स दा ल्हा पि रु स क लान् य काम ला ला स य रु ॥ **व का दि व र्द** ॥ का ना य

मा

२९

॥ वरुथकादमयतिप्ररावंदिविधं हनं ऊं घा र्णां ॥ श्रीकं पूर्वमिनसा नि
संस्तवं ॥ ॥ तानीसनाचनेनागं लवक उलाचकार्षिकं ॥ यूपमं च विकामीनमज्ज
जीवपमार्द्धकं ॥ मर्कतादुल्यरागं च रुक्थ सुहं नन ॥ विषमकनं हनं काठायी
रुगुलान् विंगथा ॥ हस्यान्वग्रहपापुपु पीनसं ग्रहनिः किमि। कुर्यतीसानहं स्यापु
वनममिकनं पत्रं ॥ ॥ **कानि सादि** ॥ ॥ नागमं च विकाराने पिप्पली मूला विद
कं ॥ रुक्माच पालिकां रागमनं घृतप्रसं विपाचयत् ॥ गृगं धनं संप्रसं समुप्र
सं तथेव ॥ ७ काहिकां। दाहिकं च आहिकं च वरुथकं ॥ ७ तत्सर्वकनं हं ति

लेखकनं रुगोइर्नामस्यासकासप्रं वनवधूविवर्धनं ॥ ॥ **शुभ्र**
॥ वासां गुठिषलेकं च रुक्मा मनिचमवच ॥ ग्रंथिकं च विकारवद्विगजक
पमार्द्धकं ॥ ताली सपत्रकाभील नवं गतिवस्कनं । कनं कानविधन्या
मजाजी कर्षमवच ॥ ७ तदुधूकनं च वगुडादिगुनि तं पचेत् ॥ धात्रीप्रमान
गुठिकां रुक्मयं च न भावनं ॥ ॥ वातिकं पलिकं च व ॥ शुष्मिकं सनिदाति
कान् ॥ विषमकनं पृसर्वधू श्रीह ॥ ७ ॥ थगुदामयं ॥ कासं सगुविपापुगु
लाकां रुक्माचहं । अग्निं वरुथकं दीकि वनवं प्रवर्धनं ॥ ॥ **वासादिगु**

मा **विष्णुः** ॥ **विष्णुमन्त्राविक्रिया** ॥ ॥ वर्षासुमान्नाइष्टपिरुष्टपात्रि
 नकन ॥ ॥ कर्मासिहं वसनदिनस्यवान्मन्त्रकरो ॥ ॥ नस्तु कल्यावित
 २२ गर्भगतुनानावाक्यं ॥ ॥ कर्मावसंनमपिवाकपिरुष्टवदन ॥ ॥ का
 यवथसं सर्वघोषकृतिर्हि विनवदा ॥ निदानाकान्पसयाविषनी गोधसायि
 ना ॥ ॥ अकदाहाधिकनष्टाप्रलापसमनंशुम ॥ संध्यास्तुलमलेदावाघव
 र्वाविनिग्रहं ॥ अंतर्वेगस्यसिंघनि कनस्यगानिनकरो ॥ ॥ सनापाद्यधिक
 वाक्कनष्टादीनां चमार्दवं ॥ बहिर्वेगस्यसिंघनि स्रष्टाद्यत्नमेवव ॥ ॥ सा

प्रसक्तारुह्यासहृदयागुह्यभावका ॥ गंडानस्याधिपाकत्वं वेनसंगुन
 प्रता ॥ कृत्वात्मावक्रमूयत्वं कृष्टावजवान्कन ॥ आमकनस्यसिंघ
 नितदयारुष्टहेषकं ॥ ॥ **कृत्वात्मावक्रमूयत्वं** ॥ ॥ कनवेग
 धिकं नष्टाप्रलापः स्वसनंशुमः ॥ मन्त्रस्यहृदिनत्केदः पच्यमानस्य
 लकनं ॥ ॥ कृत्वात्मावक्रमूयत्वं वगयात्माकनमार्दवं ॥ दाघप्रह
 स्तिनशाहानिनामकननाशन ॥ **निनामयकन** ॥ ॥ वज्रवत्स्य
 ल्यदाघप्रकनः साधान्पडवं ॥ ॥ ग्यासासुधुर्नविबुद्धिः न

मा

२३

प्राप्तिसागविग्रहा हिक्काकाऽमज्जहृदयुक्तानस्यापदवादः॥ ॥स्त्रिंत्वा
स्त्रिंत्वावहतिजासास्मृताप्रामनाभिनि॥ ॥अनिक्रीत्तावगीतावडी
वितीहंतिसेधाय॥ ॥याहृदनामानकाका हृदि सीघानधूलवान् ॥
वर्कुनचवाङ्मुसितितीकनाहकिमानवं ॥ ॥हिक्काऽमसृषायुर्कमुध
विज्ञानलावर्न॥ सीतनाङ्मुसिनीक्रीनी नयकूपयतिहनी ॥ ॥हृत्पंथंदि
यक्राममनाचकनिपीठिती॥ तांसीनगीकृवेगभर्तु कानितीपनिवर्कथना॥
दाहः स्वदाउमस्तु प्रार्कपविहृदसीहिता॥ कृजनीवागिवेगान्धमाकृतिर्य

स्वनागिरी॥ ॥ **धनंलिकालज्ञानकाया** ॥ अंगसदः शिवस्वाधारा
तताहस्तपादया॥ उतानियस्यविक्रानिसकालकानडयके॥ ॥निमदा
हासवयस्यदिवागीतंवजायते॥ करुपूवितकी० सतस्यमृत्पूरविष्प
ति॥ ॥अनिलायातिपिरुंवपित्वायातिकरुगुह॥ करुश्चक० मासु
पइर्लरंगस्यहीविमं॥ ॥हृदयंचतथानागवानिषादोवगीतले
मिनस्वापारुवेयस्यनस्यमृत्पूरविष्पति॥ ॥हकानगीतलोचस्यरु
क्कानअमिसंरुवं॥ महादाधारावेयस्यनस्यमृत्पूरविष्पति॥ ॥अंग

मा.

२४

कंषागतिर्हृत्प्रावर्तुं प्रवर्तुं न वच ॥ गंधस्वादं न जानाति सगच्छुश्च ममन्दिन ॥

॥ ॥ कनस्य दाहवद्यस्य मुखं ॥ अष्टनादि अनावाक-

सापिकात्रविनाकि ॥ ॥ गीतसंयागिपादोवगीतसंनारिमुं ॥

गिरस्तापारुवरुस्य तस्य मृत्पूरविष्यति ॥ ॥ अत्रुंधतिध्रुवं च विपू-

तिनिपदानिव ॥ आयुहीनानेपस्थिति चतुर्थमात्रं संतुलं ॥ ॥ अत्रुंध-

तीहवेडिका क्रुवंनारुभेगुमृत्त्यु ॥ कुर्वामत्येष दंडय तान कामान्मम

सं ॥ ॥ डिक्काकृष्णारुवरुस्य मुखं वक्रं कृमान् ॥ ॥ डिक्काकाम

स्य तस्य मृत्पूरविष्यति ॥ ॥ कंडुलिंपिशाकस्य वाताश्रानवधनं ॥

आहनादकर्तयस्य सर्वधनविनाशति ॥ ॥ अत्राविडसमं वेवयति तावमही-

तस्य सफाहाकायर्तुमृत्कालहानेपूराधितं ॥ ॥ तत्रावितापतायुक्तं नृकन-

स्य विरुद्धनं धादिमृत्सेनूः प्रागिजायतं च यमा लयं ॥ ॥ अत्रकापाधुव-

र्तुस्य वक्रनिः स्वासंयुक्तं ॥ वनं वेदति तं नित्यं मासमकं वक्रावति ॥

सौम्यदृष्टिर्तुवद्यस्य सा गावकुसुमेव ॥ गुडभाकिर्तुवद्यस्य सापि साध्व-

नसंगय ॥ ॥ पासिपादोवदृष्टं दहः स्वल्पतनस्मृतं ॥ डिक्काकाम

मा.

२१

तां यागि सभा गीन विन श्रुति ॥ ॥ निडा सोखं रुधेयस्य तनीन मूल मंत
भा ॥ ॐ द्रियानि प्रसन्नानि सभा गीन विन श्रुति ॥ ॥ स्व दही नाकनेयस्य
ना सास्त्रासः प्रवर्तते ॥ कं १० प्रक रूहीनस्य सजीवे नाश संभवः ॥ ॥ येन
न्य सक संयस्य गंध स्वाद रूतं रुधेय ॥ कलापूजितं कं ० स्य सजीवे नाश संभवः
यः ॥ ॥ **ॐ निका लोहान समाक** ॥ ॥ कनामधुक मृषीका ववावेदन
मलि वा ॥ सकाथ पयसा पीता क्रीन कन निवानना ॥ ॥ **कीन कनया**
विठिंग सोव रुत वय पाथा व्याघाति सिंधू रुवया व गूके पलांसिके ॥ क्रीन

समं घृतस्य प्रसं पचे क्रीरू क रु कन घ्नं ॥ ॥ **विठिंगादि घृत** ॥ ॥ विषली विष
ली मूल वय विप्र कना गये ॥ पले कं मय व क्राने घृत प्रसं विपा वयेत ॥ क्रीन प्रसं
कृतं सार्धं विषम कन नाशनं ॥ ग्रहीया धुना गघ्नी ग्रीह गुल्मानि रुदनं ॥ ॥
नषय घृत ॥ ॥ **स्वदाल घृत** गीन स ४ क धु पाका मुख स्युव ॥ रुव धूयान्न वां च
य कन मूकस्य स रुमं ॥ ॥ लाक्रा रुनिद्रा मंजिष्ठा कल्क नैले विपा वयेत ॥ घृत
लेनाल नालेन दाहती तं कना पहं ॥ ॥ **लाक्रादि घृत** ॥ ॥ **ॐ नि निदाना**
कनादि विविक्ता समाका ॥ ॥ जिष्ठा विजा रय ल स र्ग रूटिना मान्नाधिके

मा.

नकाष्ठावाहवस्त्रिहं करुणुजडवायना॥ ॥ **पुष्पाधिकया** ॥ ॥ कृष्णसदंका
पुष्पावसन्निपाताधिकं कुरुता॥ मिथितमिथिताहया निष्पन्नकनवर्जिता॥ ॥ नि
कासोख्यं हवयस्य मनीन मरुमंतथा॥ ०२ ॥ द्रियानिप्रसन्नानि सनागीनविनश्ये
॥ **०३ मिथितालकनं** ॥ ॥ वार्तपुष्पाद्युनंमूरुं सरुनंकरुनागि संन कवर्तुहव
॥ **०४ मिथितालकनं** ॥ ॥ सन्निपातव कुरुताहया निष्पन्नकनवर्जिता॥ **विदा**
वसन्निपातया ॥ ॥ नादिजिह्वावमृजानां लकृ संनानविद्यति॥ मानयत्यागु
ऊन्याविद्यायनेविद्यानयत् ॥ ॥ तस्मात्सर्वयप्रक्षेपेन सकृदित्वाविकिस

२४

तर्कनाम्यतमनवा॥ ॥ पिडास्थीतंहनितंलाहितंवाहवमूर्च्छादाहपाकाप
पन्नं॥ ॥ **पिडास्थीतंहनितं** ॥ ॥ मधुकंकडूललाघंदाडिमस्यस्ववंतथा॥ पिडास्थीतंहनितं
वमधुकं पावयलं शुलाम्बुना॥ ॥ **मधुकादि** ॥ ॥ पुकंसादुं सकरुं लुष्म
नाम विमुंशीतंहनितंलाहितंवाहवमूर्च्छादाहपाकाप
ववाय्यावहिंगुमकिविषातया॥ पिबेयुष्मागिसानवमूर्च्छितंकायुवानिना
॥ ॥ **मधुकादि** ॥ ॥ **वातपिडास्थीतंहनितं** ॥ ॥ विद्यावृक्षतकीपाथं
विमावतसासमा॥ वातपिडास्थीतंहनितंलाहितंवाहवमूर्च्छादाहपाकाप

मा ॥ **॥ वागपिडागिस्तानलक ॥** ॥ विरुकातिविषामुसं बालविश्वस
 नागर्न ॥ वत्सकंत्वकुरुलापध्व वातः शुष्मागिस्ताननूत ॥ **॥ विरुका**
वागपिडागिस्तान ॥ ॥ कूटजातिविषामुसं हनिजापहिनीद्यं ॥ सकु
 डार्कनासर्पिः पिरुः शुष्मागिस्तानलितां ॥ **॥ पिरुः शुष्मागिस्तान ॥** ॥ २८
 वनाहसहमासायः सदृशसर्वरूपिनं ॥ कुरुसाधमतीसानं विद्याद्यापयथा
 रुवं ॥ **॥ विरुका** वातकीलोपु गजपिप्पलिवालकं ॥ कुरुमात्रिकसंयुक्तं
 लेहसर्वागिस्ताननूत ॥ **॥ विरुका** ॥ ॥ अनाडी धूपद्रुताकीर

यनः काष्ठं दायाधुसंस्थामला धुनानावर्धनेकसः सानयनिगूलापेनंष
 धुमनं वदंति ॥ **॥ संतुष्टमहिदाधेनु** न्यष्टमपूरवसीदति ॥ पनीषेहसदृशं
 धीपिच्छिलं चामसंहितं ॥ **॥ वागपिडागिस्तान** नूतं बालकं विरुकावच ॥ आमगूल
 विरुकावचनं वद्विदीयने ॥ **॥ वागपिडागिस्तान** ॥ **॥ विरुका** वातकीलोपु गजपिप्पलिवालकं
 रुं विदं समा ॥ आमगूलसं कृत्वा नागं मजीरुं वदिनागने ॥ **॥ वागपिडागिस्तान**
 वन्दनं मुक्तकापीनगुक्ती सानागर्कगने ॥ बालकं नवानं रुसं मंदिद्यादिगुसं
 सकं ॥ **॥ विरुका** वातकीलोपु गजपिप्पलिवालकं ॥ **॥ वागपिडागिस्तान** ॥ **॥ वागपिडागिस्तान**

मा.

नकाशा ॥ ॥ उता न्यवहुलेंग नि विपनी तानिय स्यवे ॥ लाघवं व विहाये नत
स्यपकं विनिर्दिष्टा ॥ ॥ ससाधुधनकी विश्व मस्तुसाष्टिकलिंगकी ॥ पि
वे न्माहिषनके पकातिसाननागनं ॥ ॥ **लाघादि** ॥ ॥ वर्षारुनागनं
लाघादि कंक ककानिका ॥ सनदानूयू तैपाने रमथतिसाननागनं ॥ ॥ २६
रमथतिसान ॥ ॥ नागनातिविषामस्तुगुदूरी वित्तवत्सर्क ॥ कषायपाव
यसी तै कनातिसाननागनं ॥ ॥ **कनातिसान** ॥ ॥ पित्ताकृति यदाय
थं इव्या स्थलातिपोहिक ॥ तदायजायते तीर्ण नकातिसानमूल्यनं ॥ ॥

नकातिसान ॥ ॥ कूटजाति विषामस्तुवालकं लाघुवंदनं ॥ धातकी दाहिमं
माधकाथं कोडयुं तं पिवेत् ॥ दाहिनकं सशूलैव आमनागचइस्तु ॥ कूटजा
यमितित्वार्तं सर्वातिसाननागनं ॥ ॥ **नकातिसान** ॥ ॥ वायुप्रवृद्धा
निविर्तवलासं नदस्यवस्तादहितागनस्य ॥ प्रवाहते लं व इह मलाकं प्र
वाहिका नो प्रवदन्ति तद्वा ॥ ॥ **प्रवाहिका** ॥ ॥ धात्रीपुष्पं समन्त्रि
वित्वावातस्यदापयत् ॥ प्रवाहिका प्रशमनं नकागधुपदापहं ॥ ॥ **प्रवाहि**
कातिसान ॥ ॥ कश्चिदं व दाहिमं गृह्णतक पशुकी येनाजनधननाग

मा.

प्रवे॥ ॥मानूतः कपितावद्वि संच्छाद्यकुरु रणदान्॥ ॥ तस्यान्तं पश्य रुद्रः
स्वं शुक्रपाकं स्वलांगना॥ ॥ विलाहः स्वद्वं शुक्रं तया मंगलदरु नवतु॥ ॥
पुनः पुनस्तुर्द्वयकागः स्वासादि कानिलाह॥ ॥ विपसीवहती व्याघ्री यवका
त्र कलिंगकाः विशुकं सानिवापाथा शरीलवधपंचकं॥ तदूर्ध्वपाययदध्वा सन
यासा वधानि सा॥ मानूतग्रहपीदाघ शमनं यनमंमरी॥ ॥ **वाक्यग्रहणि॥** ॥
साजीर्धनीलपीनारुं पित्वा सं जायते द्वं॥ ॥ नागनाथगकीवेव सकोर्डन
धुला म्वना॥ पितृग्रहनिदाघार्धन कपितागिसागनूत॥ ॥ **पितृग्रहनि॥** ॥

31

उक्तमायस्य वस्त्रप्रहं गृह्णिकृपितः करु॥ ॥ तस्यान्तं पश्य रुद्रः स्वहृत्वा सच्यु
नावका॥ ॥ शरीव्याघारुयाज्ञाना गृह्णिकं वीजपूतकं॥ तदूर्ध्वपाययदध्वा सन
धुषाकं ग्रहनीगक॥ ॥ **सप्तग्रहनि॥** ॥ दृथग्वानादि निर्दिष्टं हं तुलिंगं स
मागमिदिदाघं निर्दिष्टं दवं तेषां वक्ष्यामि ते प्रज्ञं॥ ॥ विरुतिमग्निं घनदाठिमं
व यमानिकासे च वधतकीना॥ कतुप्रिये विल्वरुला सवीडेहरी तकी धान्यक
लोप्रपाथा तके मपी तं मगूना तिसात्रं निहन्ति वा मा सकरुं विवन्धा॥ ॥ ग्लोदना
नाहमजीर्ध्वाथं न विप्रदं कासगदामयद्ये॥ ॥ **बृहंगमदिनूत॥** ॥ वि

मा.
३१ नि वि कि सा

सा जाति विस्वपसि कः कसि ई घृ नीह प्रह ॥ मस्त्र स्य क घा यन संग्रह ग्रह नीह भृ
॥ ॥ ॥ **॥ ग्रह नी निदान विविता स वाका ॥** ॥ ॥ यथुदाघः सम स्ते
रम निता न्ह कानि च ॥ भ्रंभं सिष द्रव काना नि विद्या जु दव निगुयं ॥ ॥ वि सं ला
भ स्य दोर्व सं क रू ना वा प नु व च ॥ ॥ कार्य म्भान वा रु सं ॥ वि वि सा दा स्य वि
क ना ॥ ॥ ग्रह नी ना ग पा यु रू ना मं का वा द न स्य च ॥ ॥ पूर्व नू पा ति नि दि द्वा
न्य र्ग सा म ति दृ च य ॥ ॥ अ प मं पि ष्य सी मूलं पा थ हिं गु स वि गु कं सो व र्व न
र स्य ना क म जा जी वि स्त य सा से का ॥ गु ठ य मा नि ह व षा वि ठं गं से न्ध वं च वा

३२

ति नि डी कं व म य म म लु ना ष्टा द क न वा ॥ वा ना सी ग्रह नी दा घ गू ला ना ह वि म्भ्य रू ॥
॥ ॥ ॥ पि हा रु ना नी स म र्वा न क पि हा नि त प्र सा ॥ ॥ भ्र म्भ रु स्य च ना वा
स्य कं म नं च स भ र्क ना स रु उं न व नी तं व य कं पि हा ना ना म नं ॥ ॥ पि हा
म या ॥ ॥ य व म ध्या ह नि स्ती तं हा नि ठं ल क न खी द यः ॥ पु ष्या ल्वा ल म हा गू
ना घ ना म गु न रु ः से ता ॥ ॥ **॥ ॥** ॥ ति ल रु स्या त की प थ्या गु ठ
य ति स मा सि की ॥ इ न्ना म ग्ध स का म पुं पा सु ना ग वा दा प ही ॥ ॥ **॥ ॥**
॥ ॥ ॥ व को स्य ना गु ठ की ला ४ पि हा क ति स म चि ती ॥ ॥ व ट प्र ना ह

मा.

विष्णुसहस्रनाम

राहणी गुंठा विडुमसंप्रसा ॥ ॥ नसांजनं वाति विषा कटक सख वं तथा ॥ कथु
लोदक संक्रोडी पातव्यं गुठन कर्ज ॥ ॥ ~~सर्व~~ ॥ सर्वेः सर्वास्मिन्ना
रुस्रुः सहजानिव ॥ ॥ राशानां कानां द्विपलं विष्णु कस्य पल द्वयं
वडुर्जागपलं चैव सर्वं वा हि गुणं गुठं ॥ ॥ विस्दीपनं चैव दग्धं सैव वि
लघनः ॥ पाशु स्वपथनाभयं शुभं नानिवात्रनं ॥ ॥ हस्तोर्ध्वमूलसंभा
हृच्छिदं नृस्यवेक्षनं नृपु गुठस्य पाकं च निहंति गुदजातुनं ॥ ॥ वातनका
दपा नृकं पिशादं सिंघपीतना ॥ ॥ शुष्मस्य गन्धना तस्य ग्रंथिस्त्वं सर्ववर्धना ॥

३३

रुतिनिदानं मेनेत्रागसमाफ ॥ ॥ ॥ कनकापनधमनीसाप्रावगवतीरव
ता ॥ कामकाधर्षगवती कीनविनाहयसूता ॥ ॥ मंदाग्रिकीनधमाशुना
डीमन्दतनारवतु ॥ ॥ भूसूक्ष्मरुवलाशुगुदीसामागनीयसी ॥ ॥ लघ्वीव
हृदिदीफाग्नसूदावगवतीरवतु ॥ ॥ सुषिक्तस्य स्निग्धाहयातदावगवती स्निग्धा ॥
रूषितावपलातस्य रुफस्य वहति स्निग्धा ॥ ॥ वातावक्रगता नादीवपलापिरु वाहि
नी ॥ ॥ स्निग्धा शुष्मवती नाडी सर्वसिंघवसाविका ॥ ॥ ॥ ~~रुतिनाडी लक्षणा~~
~~समाफा~~ ॥ ॥ मन्दस्त्री क्वाथविषमं समं शुक्तिवतुर्विधः ॥ ॥ करुपित्ता नि

मा. लाधिकाहस्यास्य जा० नानल० ॥ **अग्रिकमपनिषात॥** ॥ ग्लानिमे
 नवविस्तर उममानूत मूरता ॥ विवस्वतिप्रवृत्तिर्वा सा मान्या जीर्णलक्षणं ॥
सामान्यजीर्ण॥ ॥ पथ्यापिष्यसि संयुक्तं सूर्योवर्चलं पिबेत् ॥ ममुवाङ्माद
 कनेव जानीयात्कृणु सा हि षक् ॥ बहुविधमजीर्णं च मंदाग्निं च तथा नृविंश
 ध्यानं वातगुल्मं च गृह्येत् ॥ **अजीर्ण॥** ॥ तथा स्मृत्वा
 कंदः ॥ १॥ ॥ ५॥ ॥ १॥ ॥ ३॥ ॥ ५॥ ॥ १॥ ॥ ३॥ ॥ ५॥ ॥ १॥ ॥ ३॥ ॥ ५॥
 शिकु ककुमजमादंसे चर्वजीनि कंदः समधनन धृतानामस्तु भी हिं गुणगंध

प्रथमकथलुके सर्पिषा चूर्णमग्नौ लयति ज० नाग्निवातगुल्मं वहति ॥
हिंवाद्यक॥ ॥ **असाजीर्ण॥** ॥ विष्वक्शूलमाध्यानं विविधावातवद्धना
 मलवाताप्रवृत्तिश्च संरुमाहंगपीठनै ॥ ॥ सोवर्चलस्य चपलं दिगुने वा म्ल
 वतसं चतुर्गुणमजाजीर्णमनिवाद्यगुणं गवत् ॥ मातुलंगनसने नृकुटिकांका
 न्यहृतिषक् ॥ जनय ज० नाग्निं च वातगुल्मं विनासनं ॥ **विष्वक्शूल॥**
 पूवीति निवगमजातिगुदं संतिष्ठते निल० ॥ यस्या किल वसादये विपूवीति
 निगद्यते ॥ **विपूवीका॥** ॥ शुंठी वल्लुखलवर्ध मरुयाहृत्

मा.

युतं ॥ हिंगुयवाम्नापीतं सर्वशूलविनाशनं ॥ ॥ शुंठीकनामनिचनागदन
त्यलाहलाहूहीकृते क्रमविवर्धितमूर्धमायुः ॥ स्वादिदं समसितं गुडजाग्रि
मांशं गुल्मानुविस्वसनकष्टहृदामथेष ॥ ॥ **समर्कनादि** ॥ ॥ **शुंठीवि**
शुंठी ॥ ॥ मूर्च्छाप्रलापीवमथ ॥ प्रसक्त ॥ सदने ॥ म ॥ ॥ उषड्वोरु
वन्धनं मलनं वाप्यजीर्णता ॥ ॥ करुणी ॥ अथदापि रू स्थितानमानानू
ना ॥ नीवं प्रवृद्धदग्नितादातं रुस्मकैवदेत ॥ ॥ **रुसापि** ॥ ॥ विद्वानस्य
नमस्कीनं पचदसगुणघृतं ॥ माहिषं जीवेनीयेन ॥ कल्केनाप्यग्निनाशनं ॥

35

उत्तिनिदानविक्रियाशुजीर्णविक्रियासमाप्ता

उत्तिनिदानविक्रियाशुजीर्णविक्रियासमाप्ता ॥ ॥ वहिर्मलकरासृष्टि
कामरुदायुर्विधाः ॥ किमयमुद्विष्यप्रकावाक्ताः ॥ एतन्नरेदत ॥ ॥
वरुपादाश्च स्रक्काश्च यूकानि रूपाश्च नासत ॥ ॥ द्विधर्मेकाथपिठकाकलु
गधुप्रकर्वते ॥ ॥ निवाविहिं गजमूले कलुगेलं विपाचयत् ॥ लेपात्सलि
वितायूकामाकूत्सनयनिरुयं ॥ ॥ **रूकानिहलनेल** ॥ ॥ करुदास
नयजाताश्च ॥ सर्वकिसर्वत ॥ यथ कसन्निताकैविक्रियेन्द्रपदीपमा
॥ ॥ नूतनानाकनाकावाकनूदीर्घास्तथानव ॥ एतताप्रावरासा

मा.

श्व. नामतः सफधागुते ॥ ॥ अंश्वादावदनावेष्टा हृदयादामहागुदाव
ववौद र्कसुमसूगन्धकैव कर्वते ॥ ॥ हृद्वासमास्यमवन. मविपाक
मनावकं ॥ मूर्च्छा कूर्दि कानानाह कार्ष्णकवधपीनसात् ॥ ॥ पक्षागय
पूनीषात्तु जायते ध्वविस्पर्षिता ॥ कृष्णस्यूर्ध्ववयुधुर्न जदामागयो नम
स्वाः ॥ तस्यास्याज्ञाननिष्ठसु विगंधानु विधायिनः ॥ ॥ विरुद्धं लवि
सं र्ककार्ष्णपात्ररूपा लुगा ॥ नामहर्षमिसदनं गुडकधु विमागमे ॥
~~यमेति न~~ ॥ ॥ विडिंका विल्वमूलं च मूक्तकं तु वनातिव ॥ यवका

३७

क/म/प्र/स

नंपिवेरुक्र सर्वकिमिविनासनं ॥ ॥ ~~किं निदान किमिविक्ति सना~~
~~का~~ ॥ ॥ अथ पाथुनागः ॥ पाथुनागः स्मृतापंचव्यातपित्तकरुसुथ
बहुर्थसन्निपातेन पंचमीरुक्तममृदः ॥ ॥ लघुसुखीननिस्थीवनगमगु
सादमृदुक्तमप्रकृतकूटस्थ ॥ ॥ विन्मृगपीतल्वमथ विपाकौतविष
तस्तस्य पुनः सनानि ॥ ॥ लघुगुतयनादीनां नृकृष्टु नृक्षप्रका ॥ वा
पाथुमयकं यस्मादनाहयमादयः ॥ ॥ ~~वातपाथुनागः कान~~
पीतनेयसक्तमृगादाह गृष्टा काना निना ॥ ॥ तत्र विक्षो निपीनार पिरु

भा. पाशुमयीनन॥ ॥ ~~पिहपाशुनागल~~ ॥ ॥ करुष्टप्रसकास्वप
 थं तं डालस्याकिंभोनवा॥ पाशुनागीकरुष्टस्वष्टनयनानन॥ ॥
 धात्रात्रावकरुष्टासकृदिंष्टाक्रमानिग॥ पाशुनागीकिदिंष्टा
 यः॥ ॥ मृहिकादनशीलस्यकेप्यन्यन्यगमान ३१
 स॥ ॥ कखायान्मात्रं पिहं मुखलासधनाकरु॥ ॥ पुनर्नवानिबूषण
 लमुंठिनिक्तामृतादार्यतयाकषायः॥ सर्वाङ्गमथदन्वागलसंस्थ
 मन्विर्पाशुणदंनिहन्ति॥ ॥ पाशुदन्तनखैर्यमुपाशुनंयमुयोर

धरु॥ पाशुसंघातदन्वीवपाशुनागीविनग्धति॥ ॥ ~~तिनिदानपाशुनागवि~~
 कित्तासमाफा॥ ॥ हानिद्वर्षसदं हानिद्वर्षद्वखादय॥ नकपीनसकृन्म
 जोरुं कवर्षहरेडिय॥ ॥ दाहाविषाकदोवर्षसदनान्विकाधिम् ॥ ॥
 कामलावरुपिलेष्वाकाशुमपाग्रयामता॥ ॥ कासाक्तनाखलीरुगाकृष्ट
 त्यारुकरकामला॥ ॥ कृष्णीनसकृन्मृगहगनूनश्रुमानव॥ ॥
 गृहवीस्रसंमर्षद्विहनिदनपथवा॥ कोट्युर्कगुत्तपीतासर्वकामल
 हानका॥ ॥ ~~कामल~~ ॥ ॥ सनकाकिं मुखकृदिं विभ्रुयशताम्य

मा. ति॥ ॥ दाहानूविदधानाह तन्नामाहसमचित॥ नसागिसंज्ञः क्रिपं
हिकुमलावाविषयक॥ ॥ यदाहुपाधुवर्धस्याधनित॥ पीतवर्धना॥
वलोत्साह कर्यं तं दामंदायित्वं मृदुद्वान॥ ॥ मृदीष्टहर्षागैर्मर्दंशुसादृश
प्राग्निविजुम॥ ॥ हलीमकं तदा तस्य विद्यादनिस्त्रापिद्वान॥ ॥ वात ३८
पिद्वानकन॥ ॥ गितानिकावलाययिष्टिफुल्लानकनीयुते॥ ॥ लहलि
कात्समध्वार्क हलीमकप्रभंतसि॥ ॥ ॥ तिनिदानपाधुमागहली
मकविक्तिसामनाका॥ ॥ मृथनकापिद्व॥ ॥ घर्मव्यायामं लोको

धव्यवायेनतिसविते॥ ॥ तीक्ष्णप्रक्रान्तलवले नस्तेकदुहितवच॥ ॥
पितुंविदग्धंस्वगुलीविदहन्वागुसातिरी॥ ॥ ततः प्रवर्धनकं मृद्वंवा
त्वादिध्वपिव॥ ॥ दुर्धनाभक्तिकेधूसमदयासिगुदेनध॥ ॥ कपिरी
नामकूपेयुसमस्तैवप्रवर्धते॥ सदनीभीतकामिलीकधधूमायनवमि॥ ॥
लाहवाधिशुनि॥ ॥ स्वसातवत्वास्मिन्नूराविष्यति॥ ॥ सार्द्धं सपाधुसस्तह
पिद्विलंबकलाचिरी॥ ॥ वन्दनं नृयवापाथकागमूलइलानरा॥ ॥
डाक्रामध्वकमाधीकं वन्दनं यन्मकेशन॥ ॥ आस्रजवप्रवासानिपिषेकीनेम

मा

संयुती ॥ नकातिसाननाभयत्रकपिरुप्रभक्तय ॥ ॥ **अधगत ॥** ॥

दोर्वल्यभसकागवनवमथमदापाधुतादाहमूर्च्छा शुकेधानाविदाहास
धुतिनपिसदाहयगुल्यावपीडा ॥ नष्टाकाधुस्यरुद ॥ शिनसिचपतनीपूति
नीष्टीवनत्वेरकद्वेषाविषाकाविकृतिनेपिरुवद्रकपिरुपसगर्भत ॥ ॥

हिरीदगंयद्येमुवक्तुभसाहिनेक्रम ॥ लाहिनाभनदगीचप्रियतेनकपिरुक

॥ ॥ **ॐतिनिदाननकपिरुविकिसासनाफा ॥** ॥ वेगमलाधरुया

वेवसाहसाधिवमासनात् ॥ उदासाक्रायनेयक्रागदाहुरुचगुष्टयात् ॥

३२

स्वासांगसादकरुसंप्रवताल्लभषचुद्युग्निमांसमदपी नसकाभनिद्राभषा

रुविष्यतिरुवक्तिसंवापिऊक्त ॥ उक्तकृत्तारुवक्तिमांसपनीनिनेगु ॥ ॥ श्री

गपाधुसिनापधुसंतापकनपादया ॥ कन ॥ सर्वंगगधुतिस्नेकनेनाजय

क्रमः ॥ ॥ स्वनरुदनिगात्सुलांसंकावभंगपावयया ॥ ॥ कनोदाह

तिसानधुपिराडक्तस्यवागने ॥ ॥ शिनस ॥ प्रतिपूर्वमरुकरुन्दनवव

कागः कष्टस्यवाधिलभविहय ॥ करुकोपत ॥ ॥ चकोदमतिनवमुषदि

वापिसनचित ॥ ॥ ऊघाभषान्तिनेऊक्तुर्वनमांसपनिक्रयः ॥ ॥ सर्वने

मा.

इतिर्विपिलिंगेर्मासवलकृय॥ ॥ नितास्यलादुगमक्रीत्रिपिप्यलीवद्र
गाल्वं॥ भंस्याइर्द्धिगुनिर्तेसेहयत्तमधसर्पिषा॥ नृर्द्धितंप्रासथदतत्स्वास्तका
कलादु॥ पार्थगूलिनमल्यागिसुफिडिक्कामनावकीहसुपादीगदाहषू
नेत्रकीष्वार्द्धा॥ ॥ यकावर्प्याविकित्साधुसर्वभूषाप्यतीत्यथा॥ ॥ उपा
वनेदात्मवर्नीदीफागिमकृत्तन्नै॥ ॥ गुक्ताक्रमन्नर्द्धस्थानमूर्द्धग्यसनिर्प
ठित॥ ॥ कर्कनवद्रुमेहकुंयक्काहकीहमानव॥ ॥ **तिनिदिन**
यक्कालविकित्सासमाफा॥ ॥ प्राश्मकदानान् गतः प्रदृष्टः सतिन्न

४०

हिन्नकाठाखनदुस्यधाघ॥ नित्रतिवकासहसासधापामनीपिठिः काग
मिप्रदिष्ट॥ ॥ पंचकागः स्मृतावातः धिक्कृत्तकृत्तकृत्तः ॥ कृत्तयाय
क्रिंमं वं वं सिनयुयथारुन॥ ॥ पूर्वनूपंरवेरुषी गूकपूर्धुगालास्यक
कः ॥ कः पुंश्च काफानामवभाववजायते॥ ॥ कर्कस्वमूर्द्धादनपार्थग्य
लक्रामाननः ॥ क्रितवलस्वनाजाः प्रसकवेगमुसमीनः ॥ नरिन्नः स्वनः का
गतिगुहमेव॥ ॥ रागिडाक्रामडीभुंगीपिप्यलीविष्यरुषर्द्धगुठनमा
दकीयुक्तालिहमानूतकागनै॥ ॥ उपाविदाहकनवकः ॥ धनन्यादित

मा

सिक्कमखसुषार्ह ॥ ॥ पिरु नयीता निवमन्कहनि काससुपाधु ० घनि
 दक्षमान ॥ ॥ खड्गन पिप्पलीडा क्रानि कला का समाधिक ॥ मधुमर्षि
 यमी सह पिरु कागवि ना सन ॥ ॥ पालि यमानेन नमस्व नसीदन् ॥ ॥ न
 ने माह ० कुरु दूरु देह ० अरु क नूजो नवसादयुक्तः काला हनं सोड क
 रुं कुरुन ॥ ॥ **श्रीमकागव्य** ॥ ॥ देवदानु गीनाला गृणीध न्चयवास
 कं ॥ वेले कोडयु गंह न्या रुं मकाग सुदानु ॥ ॥ **श्रीमकागव्य** ॥ ॥ श्री
 यवाय साना ० धराजा ० धनथ विग्रह ० नक सानः कुरु वाय गृहीत्वा कागम

नथर ॥ ॥ साकारु निद्रामंजिष्ठा पिप्पली देवदाम्ब ॥ ० कुरु दूरु कुरु मर्षिः कुरु
 कागविना सन ॥ ॥ कपित्थ रुतुं कागं कुरु दूरु यं प्रदं ॥ स गायतुल्य कुरु
 दाह माहानु प्राण कायं वापल रुं क कालि ॥ ॥ पिप्पली पत्रकं साक्रा सपक्वं वृहती रु
 मे ॥ घृतो घृतो लह काय कागविना सन ॥ ॥ **श्रीमकागव्य** ॥ ॥ शुष्प चिनि
 श्री वरि उर्वल फु प्रकी रमांस नूधिनं सपूर्य ॥ तत्सर्वलिंगं रु स इष्टि किं स विनि
 सि तहाः कायं वद कि ॥ ॥ पथ्या पिप्पली मूल मूक दहनः गुणी तथा पिप्प
 ली वद्या या न नूख रुथ सम निवंचरु कुरु सक्क ॥ गवा इग्ध मृ दयि ना

ना

वविषयद्वृष्टस्य संगुडिकागस्यासविनामनं ॥ करुहं वागकृत्यस्यागुनं ॥
॥ ~~अष्टांगगुण~~ ॥ ॥ नवं कदा नित्तिद्वितामपि पादगुणानि ॥ स्तु
विनानां च दाकागः सर्वापायः प्रकीर्तितः ॥ ॥ ~~तिनिदिनो कथयिष्ये~~ ॥
~~मविकि~~ ~~साधिका~~ ~~मलमाफ~~ ॥ ॥ मूर्ध्नुर्ध्नुर्वीयून् दत्तितस्वनी यकृत्सीहा
कुमिस्रवादिवाक्रियन् सधाषवानाशुहिनस्त्रियस्मात्ततमुहिर्कस्यति
धीयतवृत्ते ॥ ॥ अन्तर्जयमलाकृद्गंगीर्नामहती तथा ॥ वायुः कुरुना
नगतां पंच हि कंकनातिव ॥ ॥ कं (अन) हीर्गुन्त्तहि वदनस्य कषायता ॥

४२

हिकानां पूर्वरूपाणि कुरुनाता पञ्चवच ॥ ॥ पानाकेन हि संशुक्ते सहसा
वीडिमानलः ॥ हिकायत्पुष्टगहलाताम्विद्यादन्नजातिवक्तु ॥ ॥ विमलस्य
मलेर्वर्गे र्याहिकासंप्रवर्तते कम्पयंती गिनायी वंयमलातां विनिदि ॥ ॥
विकृतकाने र्यावर्गे मन्देः समतिवर्तते कृदिकानामसा हिकायद्रूपस्य प्रथ
विता ॥ ॥ नातिप्रसूताया हिका धातागंती ननादिनी ॥ अन्यकापडववती
नंती नाना नसा स्मृता ॥ ॥ मम्माक्ष्मपीडयतीह सततं या प्रवर्तते ॥ महाहि
र्कगि साह्या सर्वगप्रप्रवृत्तिनी ॥ ॥ मृदीकाया मुख्या रागमचकला गम्

मा

शेनागने॥ मधुनासहस्रहयं हि कां हन्त्या गुदान् स॥ ॥ आयस्य न हि क
नयस्य रह दृष्टिः ॥ अर्धं ताम्रं नयस्य निभं ॥ क्रीडाम् कर्षितकायातिमा गंतं चोव
न्योवर्ज्ययद्वि कमानो ॥ ॥ **शितानिदानाकपनिष्कानि कानि कित्तापिका**
नसमाप ॥ ॥ **अथ उवाच** ॥ महादंष्ट्रिन्नगमकः कुरुते देहपुत्रैश्च शिष्य
मम महा व्याधिः स्य सनुका विनिष्कृतः ॥ प्रायूपं गत्वा हृत्पीडा मूलमाश्र
नमेव च ॥ आनाहावकुर्वे नस्य मंख निष्कादनुवच ॥ ॥ यदा संनृप्य आगं
सि मानूतः कुरु पूर्वकः विष्वग्भूतिसंक्रुध सुदाश्रितान् कनोति स ॥

४३

हीनः प्रथमं सि तं वासे हनादिज्ञायमं हं ॥ महा आसाप नृपुत्रैः क्रिप्रभव विप
द्यते ॥ ॥ **महा आसाप** ॥ ॥ दुर्दंष्ट्रासि निष्का त्वं नवप्रज्ञा हनत्यधः ॥ क्षिप्प
वृक्षं दृष्ट्वा नो दुर्दंष्ट्रं वदन् हासित्वा ॥ दुर्दंष्ट्रिर्विषमं विद्या काना
कतल्लतः ॥ प्रमुखा नंदनार्हं प्रमुखा शानति पीठितः ॥ ॥ दुर्दंष्ट्रं मज्जक
प्यक्तं अधः आसा निवर्तते ॥ ॥ मुखं कलाम्यतः क्षुब्धं सक्तं च हं
तुन ॥ ॥ **दुर्दंष्ट्रा कलाम** ॥ ॥ यमुखासि निविष्टं सर्वं प्राप्य पीठितं
नवाश्रितः सिद्धिः स्वास्ती मर्मयुद नृगं दिशः ॥ ॥ **नाहं सव** **नृको**

मा. नवइष्टमस्थानं॥ ॥ससाध्यडशवसिनःसर्ववाचकलकुत्साः॥ ॥
॥रुद्रसाध्यतमस्तुपांतमकठकुरुडव्यते॥ययःस्थसानसिद्धंतितम
काइर्वलस्थव॥ ॥जाकतहनीगकीकृष्णककीटारण्याइनालता॥सर्पिमेष
पांचूर्णवस्थसहसिसूदान्धं॥ ॥२॥निदानाकपत्रिक्रमस्वास्विकि
साधिकानममाफ॥ ॥भूएवेरापरीविषाध्ययनारिषातसंक्षयःप्र
कृषिताःपवनादयस्तु॥ ॥२॥गःसूरस्वनवहृष्टगताप्रतिष्ठाहृन्ःस्वन
रावकिवापिहिषद्विधःस॥ ॥वातेनरिन्ननयनाननमूयवर्वारिन्नः॥

नेर्वदतिगर्दरावत्स्यनक्षरे॥ ॥ पिरुनपीतनयनाननूयवर्गो ब्रूयाद्भुवनस
वराहसमन्ति तेन॥ ॥ ब्रूयात्कुरुनस्तर्गकुरुनूदक ॥ ४४ स्वत्यंननेर्वद
तिवापिदिवाविलाषात्॥ ॥ सर्वात्सकेरुवति सर्वविकानसंपतयाप्यस
धमृषत्वनरुदमाहुः॥ ॥ धूषातवाकक्रयकृति क्रयमाप्नुयाच्चवात्गव
वापिहृत्वावक्रनिवर्जनीयं॥ ॥ अंतर्गेतंत्वनमनक्रयदंविनेममदान्च
याद्वदतिदिग्धगलकृष्णाल॥ ॥ वव्यान्मृषेतसकट्टिकतिकिञ्चिकृणा
लीनकीनकट्टुगमदहनेः समासेः नृक्षं गुडं प्रविदितं पिसृगन्धिसृकं व

मा. सर्व्यपीनसकृत्नविषप्रसक्तं ॥ ॥ श्रीमत्सहस्रसूक्तस्यवर्षिविनास्थित
स्यापिसहासजातः ॥ ॥ मद्योपिनः सर्वसमूहवत् स्वनामयाधानसमिद्धि
मति ॥ ॥ ॐ तिनितानाकपनिक्रमस्वनरदविदित्साधिकाना ॥ ॥ दृष्ट
लपीजनयुतं परमनपिस्तु नृ द्वाहदायवस्तुलंककृतीप्रसक्तान् ॥ ॥ स्यात्स
कंवस्तुलंकवस्तुलंकविद्याधोगुणमाहृजुतास्तिप्रपन्नके ॥ ॥ द्विपलदा
तिमादष्टीसुध्वाद्युत्तलप्रयं ॥ ॥ तिस्रवास्तिपलंकवस्तुलंकमकउक्तान
यह ॥ दीपननावनसर्व्यपीनसंस्वागकामनरु ॥ ॥ दाडिनायह ॥ ॥

४७

ॐ तिनितानपनिक्रमस्वनरदविदित्सासमाका ॥ ॥ इक्षोर्दधेः पृथक्कर्षेवितत्सा
लोकनादिति ॥ ॥ दंयः पंचविहयास्तसां वक्तानिसक्तनं ॥ ॥ दृष्टासां मानलो
ओवप्रसक्तालवतंमृत् ॥ ॥ दंयः पंचविहयास्तसां वक्तानिसक्तनं ॥ ॥ दृष्टासां मानलो
जाम्खलमपनीर्षनायहिकागस्वनरदतादे ॥ ॥ ॐ आनगप्रवर्तसक्तनं वि
दिनक्तप्रुक्तनंककरायं ॥ ॥ ॐ ॥ मवास्तमहतावर्षेगनास्तिनिलादृष्ट
यतीहइहसी ॥ ॥ मृद्वीपिपातामृत्खलमपनीर्षनायहिकागस्वनरदतादे ॥ ॥ ॐ आनगप्रवर्तसक्तनं वि
मार्त ॥ ॥ पीनरुलमपुहनिक्तसक्तिकं धूमंवपीननवमस्तदाह ॥ ॥ तंजास्य

मा माधुर्यकरप्रसरसकाषनिदान्विलोनेनवार्हस्त्रिधंघनस्वाइकराविवर्धसना
महर्षासनजंवनकु ॥ ॥ मूलाविषाकान्विदाहृष्टाग्यसप्रमाहप्रवलाप्रगका
दुर्दिनिदाद्याखवभभनीनसान्दाप्रुनकीवमर्तानृत्तस्यात ॥ ॥ **विदायस्य ॥**
विदायस्य ॥ ॥ ७ सोलवंगगजकमनकालमडासाजाप्रियंगुघनवदनपि ४०
प्यलीनां ॥ मूर्ध्निगितामधुयुग्ममनुजाविनिधुदुर्दिनिहकिकरमान्गपिरुजांवा
उलादि ॥ ॥ विभूययास्तसमगभवर्गृष्टकालकागमर्हिपूगप्रगकीप्रदुर्द
यादृष्टमिहार्हिवगमायादितधुविनाममति ॥ ॥ **विदायस्य ॥** ॥ ७० ति

निदानाकूपनिर्गमकृत्विदित्वाधिकारः॥ ॥ तयप्रमाणं विज्ञसंक्रयादाउ
 र्वं विज्ञं पितृ विवर्धनेधु॥ पितृसवानैरुपितं ननाभं तालप्रपन्नं जनयं स्यात्तां॥
 कामास्यतामान्नसंरुवायां मोदस्तथाभं रविनस्सवाधि॥ अनानिनामेवि
 नसंरुवकं नीताहिनहिपु विवर्धिमति॥ ॥ मूर्च्छान विद्वप विलापदाहनकं
 कालं प्रगतं धुलं भयं नीताहिनं दाम्स्वतिकताव विरामिकायी पत्रिधु
 पनक्षी॥ ॥ वाष्पावनाधो करुसंरुगेमे नद्रावलासेन रवेन्ननस्य॥ नि
 जागुन्त्वं मधुना स्याताव नद्रादितं पुष्पतिवातिमां॥ ॥ क्रूरस्य नृक॥

मा शितनिर्गमास्यानृषुचुर्थीकृतजामगा॥ ॥ प्रसक्त्यायाक्रयसंहरवा
 सा नयाशिरुक्तमुनिभदिनष॥ ॥ यः पीयतम्कः ससुखं नचातितांसन्निपा
 नादितिकेविदाह॥ ॥ त्रिदोषसिंघमसमूहवंतु हृद्बलनिष्ठीवनसाद
 कर्तु॥ नसक्त्याकानिबलरुमानि। तस्याम। नषमर्हिषग्यवस्यत॥ ॥ ४८
थानिदना॥ ॥ वीजपूनेकयेकासंतादिमंवाप्रवतसं॥ सगर्हनेनिह
 त्यागुलहंरप्रासृज्जंयं॥ ॥ कानमहक्रयकागस्यासाइसुष्टुदहिनां॥ ॥ स
 र्वीत्यकिप्रमकागगकभनां वनिप्रमकानां॥ ॥ धामापडवयकाइशुभनमय

हया॥ ॥ **निनिदानीकयनिद्रमइप्राविकित्ताविधानः॥** ॥ संज्ञवहास
 निक्कासपीडितासुनिनादिहिः॥ तमासुपेतिहसासुखः। खवपाहकृत्॥
 सुखः। खवपाहावननःपतनिकासुवत्॥ ॥ माहासूक्तिकामाह॥ ॥ पश्चि
 मसाप्रकीर्तिता॥ ॥ वातादिहि॥ लभसिर्नमयनवविष्टाव॥ ॥ सुपनासु
 पिरुक्तप्रवृत्तिनावनिवृत्त॥ ॥ हस्योऽहंरुतमसुनिसंज्ञाधोर्वस्यमवय॥
 सर्वासापूर्ववृत्तानियथासंववितावयत्॥ ॥ वैपथ्यममर्दयइत्ये
 जाहदयस्य॥ काभ्यंयथावान्महायासूक्तोऽयवातसमय॥ ॥ सपि

मा पासाससनापनकपीतावेसुऊन॥ संहि नववर्षा पीताहा मूर्च्छायेपिरुसंर
 वर ॥ ॥ गुनूतिः प्रायुगेन ऊयथेवाड तावर्मभा ॥ सप्रसकः सहु सासा
 मूर्च्छाये करु संरुवं ॥ ॥ सर्वाकृतिः स निपातादपुस्मान ० वागत ॥ ॥
 सऊकुः पातयसागु विनावीरुत्तवष्टिने ॥ ॥ पृथिव्यापसुमानूप
 नफगाभयतन्मयः ॥ तस्मादकस्यगत्यननु विमूर्च्छनिमानवाः ॥ ॥
 मथनविनयनलातेनसुविशोकमानम ॥ गमप्रतिविक्रियनरुमोया
 वंनयावगुपकिनयातितहू ॥ ॥ वेपथुः स्वप्नमूर्च्छासुसमयेविषमृष्टि

४८

त॥ वदितव्यं नीवतसंयथासंदिषसकृत्से ॥ ॥ विषनिदान ॥ ॥ दापयनका
 दि ॥ ॥ मूर्च्छापिरुसमः प्रायानकपिरुविसाउमः तातावातकरुहानि
 डापुससमरुवा ॥ ॥ विविक्ता ॥ ॥ उभीनपपटंभत्यं गकनाभीतवानि ॥
 मधुयुकां पिष्टं वउमनागतमूर्द्धम ॥ ॥ सनाससाससमसंकाहीरुत
 मृतापमः ॥ प्रागविम्व्यतगीष्टं मुक्तासद्यक्रियारुने ॥ ॥ ०० निनिदानाका
 यनिजममूर्च्छाउमविकिसाधिकान ॥ ॥ येविषस्पगुभाप्राकातमद्यपि
 व्यवस्थितातेनमिथ्यापयूकेनरवस्तुममदाप्यय ॥ ॥ ॥ हिकाथसागेनः

५

[illegible][illegible]

मा काहिमूर्तिः ॥ दाहं प्रकृतं धानं पिरुवरुस्य हे घडं ॥ **॥ मदादाहलकन ॥**
 कस्तुरिहानुगं न कसदिकं दहति ध्रुवं ॥ संदृष्टं नृप्यं न वा नायुः कस्तुरिहानुगं न कसदिकं दहति ध्रुवं ॥
 लाहगंधार्कवदनावद्विनेवावकीर्णं ॥ पिरुद्वनसमं पिरुस्तु वा यत्नविधिः स्तु
 तः ॥ **॥ पीतदाह ॥ विकिसा ॥** ॥ उमीनवंदनं मस्तं पदा ले समुहो घवं ॥ गक
 नासिप्रितं पयं दाहावनहं पत्रं ॥ ॥ रशानिना धादग्धा नाजी ॥ गकः समं
 तः ॥ सवाक्षा संदनं दहं प्रदहत्स दवासा ॥ ॥ संगुच्छगलनासा धा जि का
 निरुच्छवपकं असृजं पूरुका वस्य दाहो यस्मात्स इस्तनं ॥ **॥ पूरुका वदा**

५१

हसक ॥ ॥ **॥ निनिदानाकपविक्रमदाहविकिसाधिकान ॥** ॥ मदयं लूक
 तासायस्मा इर्मागमास्ति ॥ मानसायमता धाधिनून्माद ॥ तिकीरित ॥
 धीविश्रमः सत्त्वपनिप्रव ॥ धर्मा कस्तुरिहानुगं न वा नायुः कस्तुरिहानुगं न कसदिकं दहति ध्रुवं ॥
 वगुच्छं सामान्यमन्मादग कस्तुरिहानुगं न वा नायुः कस्तुरिहानुगं न कसदिकं दहति ध्रुवं ॥
 हिंगुलीव रं धाधिनून्माद ॥ वगुच्छं सामान्यमन्मादग कस्तुरिहानुगं न वा नायुः कस्तुरिहानुगं न कसदिकं दहति ध्रुवं ॥
 अवाचीया पुदं वीवाजी नमांसव लानन ॥ जागनूकी कस्तुरिहानुगं न वा नायुः कस्तुरिहानुगं न कसदिकं दहति ध्रुवं ॥
 रधति ॥ **॥ अवाचीया ॥** ॥ **॥ निनिदानाकपविक्रमदाहविकिसाधिकान ॥**

मा

[illegible]

५२

अथ सा वि किंसा

[illegible]

मा

ध्यातुं नरुत ॥ ॥ क शानि वि वि धां व्या धी न् सर्वो जे का ग
 स ॥ ॥ अथ क नरुत न र्नाय वे नू य मि ती स्मृ तं ॥ ॥ **वृद्धे**
य नरुत ॥ ॥ अथ नू य नू य अ न म वा या त दू ग पु न सं का र न
 य व ता सं ले रं ग स्तं य वे ता म पि ॥ ॥ नो म ध य ता य न्व
 पा नि प्र वृ सि श दै गं र व य य क कृ त्वं ग्य द्वा ग म ना म नि
 ड ता ॥ **यथा** ॥ ग हं गृ कृ त ना मं स्यं द न ग म त् सु क ता गि
 ना सा क्रि ज द्वा नां ग वा या म पि कृ द न ॥ **यथा** ॥ तं द स्त दा ति ता

५३

नू या मा ह यथा स व र न वं वि धा नि नू या नि क शानि कृ पि
 शानि न ॥ ॥ ह तु स्म न वि श खा च र व द्रा ग वि श ख कृ त् ॥ ॥ **य**
त नरुत न वा त नरुत न र्नाय न ॥ वि कि ल्या ॥ ॥ ॥ गृ णि क व ति म
 व र द व द्या न र कां जि क वि सु क न र ग म र का वृ य पा नि ता
 सं य था ॥ ॥ ॥ गृ गृ त् का वृ गी ख त् च द रि द्वा नां र मा ॥ क्रि त
 ने न द ने न न यि व द्वा नै वृ ष द्वा नू र क ॥ ॥ **क्रि त वि य**
था ॥ ॥ ॥ सा ख क रं य म गृ का म त द गृ त क र त दि च

मा

हे धव सङ्गतं यत्तादात विना सनं ॥ **यत्तादातस्य** ॥ ॥ प्रसा ॥ त
निष्ठतं गोयं मञ्जुमते न यत्तादात कां जिक समयथादि गुन कर्क
विप्रकगं न्दिक मधुसे चवं वया सतादा दा न ता सा गज यिपी न
प्रसा नित्या मृ न मा मि कि ज न ता त कं य यै कं क षं क षं नै न य
यं आ सि ति वा त क बु ति मि ते खां ७ गृ ध्र मि अ दि त ह न र्क र
जि ता गृ ह ध न र्क र ता स नं ॥ **धमा** ॥ **कृ बु ष सा द ति ते ता** ॥
श्र ता ता सा गृ द् वि र स त मू ति म द्द ख धं ज त य् प्या ग्व

१४

गं अ च ह व् खा वृ ध दा द र य मा ति रा ज मा दा य म्म ल ग म ति का त य ७
गं क म र्क म्मि दं कृ त्या वि दा न य त मा त्र क वि व ल्प स ल य् से य
ये ते थ वा क्सा द के न वा स यि खा वा यि त य कृ द वि स द न य न वा
श्रु ति स वि ग ता वा य् सा य् म म्म ग्ति त य य ॥ क ति गृ ह गृ
ध मि र म न्या स र ह न गृ ह ज र का य ग ता ता ग म न् स्ता त् स
बो र य् प्र सा स य ७ अ ला यं त म र्क म्मि य ७ स वे आ यि ति वा त न
श्र ता व द न ॥ ॥ **ध प त** से च वा न्यं व गृ ग्म गृ न्दी क री त

रवाग्राविधिकिता

ਨੇ ੨੫

[illegible]

५५

[illegible]

मा

ॐ धव त्रोट कुन्तं भम मा वा ति लुन्त प्र ॥ धमा ॥ वात त रुन ॥ ६
ह रिद्र व चा कु सु धार वा न त ह लि त कि वा वे ति मू त म्ब दू ग्म मू क
स धा सु ड ति ले व या ॥ ॥ ल क वा त त म ॥ ॥ वि ले वि ला द
स म्ब दू स्य दा मू का म द सु त ॥ ॥ प म्भे स ह ल त र ग्म ग म्भ ह वा को
र सो म्भ ग ॥ धमा ॥ वात त रुन स म्भ ॥ दि कि ला ॥ ॥ वि तो रु न जी
उ का म्भ यो दा रु त र म्भ भ व द ति म भू कं ती र का का लि यू कं का व
सु गि त र ग क त म भू स यू कं वा त त क वि व ल त व या ॥ वि ता वि क

वात त रु न म्भ ॥ ॥ क रु ते मि य गु त ता सु प कि लि ५ ग्भ सि त ता
कं दू म्भ वा च त र्गु न्द स ध रि ग व स क ता ॥ वि क दा व य म्भ ॥ ॥ गि गु
व त न भ म्भ क र्म म्भ पि त न त व प्र क हा वि क वा त त क म्भ वृ त व
सु खो व द ॥ धमा ॥ वात त रु न म्भ ॥ ॥ व सा सि त ता ग व रि गु दू
स ता व रि क क म्भ सि वं क ला म्भ सि दू ते र वि द म्भ द त र वा ग त न त
वा तं वा त त कं ग म्भ य द्दि र्क ॥ धमा ॥ वात त रु न म्भ ॥ व ता दि ते र
ॐ पा द म्भ म्भ त मा दा प्र क दा वि व रु म्भ त पि म्भ वि व म्भ वि कं दू सु द द म्भ

मा त्रिकजान् र संस्मरन् क प्राप्तिं सृजत ग्पथं यत्तदा व प्रवक्ष्ये तं सुद
 र्भम् नृकं तेनैव ध्यायितुं ववृष्टिर्के ॥ ४ ध्या ॥ ॥ श्रमवात तत्र न
 जनयत्यग्निदोषं यद्यसका रूयिजो तदं उसाह सानि वेत
 सदा द व वदू मृततां कृत्त क छि वि न तां गुलं त थानि द्रा विव व जल
 यं तृ कृदि तं समूचा य दृगद विद्वि वधनं या च्छा तु कृज माना द
 कक्षा ग्ध्या नू य दृ वं ॥ ४ ध्या ॥ ॥ श्रमवात उ व दृ व न ल क्रन ॥
 धितो सदा ह राग व सृजत व वना नू गं सु मि तं गु न क दृ व क र

दृ सु त मादि स ॥ ध्या ४ ॥ ॥ का त यि त ग्ध य सृज क ल क्रन ॥ ४ ॥
 प्र क दा र्वा नू गं सा र्वा दि दा र्वा मा व्य उ ग्र तं स वे धा य व त ग्ध
 थ स कृ क सां नि या त क ॥ ॥ त्रि धा व त क्रन ॥ ॥ बी कि सा ४ ॥ ॥ श्र
 वृ ष्य ग्ध र्शे न कं म त व नू न क स्य व ग्ध दृ वि ना ग ल य ति स म ल ग्ध नि
 य कं य त् ७ ॥ कां जि के न त त ध यं वि दा त व द मा ग्र क श्र म वा
 त प्र वि द्ध यि या ग्ध य म मृ ता य मं ॥ ॥ श्र लं वृ षा दि वृ र्ध ॥ ॥ ४
 ॥ ति नि दा ना क व त्रि कृ म श्र म वा त वि कि सा वि का त ॥ ॥

मा

श्रीमद्वाङ्मयिक

षेयथ सुमसामददेउतासुखरव सवधुनवसुषु
प्राप्तनववनपुत्र॥ ५३॥ तत्रतन॥ ॥ यथा॥ ॥ वापुपुव
उनप्रविस्सुनं ह्याग्नेपुष्टिकवस्तिदसंतिर्ह्युद
षवद्यनागभवति तवकोपसमुयेतिगठ मद्रुमद्रुग
यसमंयुकापेविहानससुहनगादहदेसस्यदनात्यं
नमदेनाद्येस्तिग्मेकलोकेयसमप्रमाति॥ ॥ यथा॥
यात५३॥ तत्रतन॥ ॥ गममातिप्रामदसनेविज्जेयति

क
पुष्पा५३कशाति५३सु नृमाहदाहासि कलदिमात्यांम
दमृशोहमनावयु कंमभंदिनकव्यतिमाधराहुनिदाद्य
कात्रजलदात्यमर गिततिगीतैसमुयेतिगठंनि॥ ॥ यथा
पित५३॥ तत्रतन॥ ॥ सुस्यादमातेरतिहाउनेयव नानव
वातिउकिनातयथाविकात्रेमाकेरुयिषकृवनाति
नसुकुविली४३॥ येवेनासउनकेरतिहाउनेयव नानव
यमपजंम कशाति५३॥ तदलासकागसदनावधि सपुसकेला

[illegible]

कि॥ यथा॥ ॥ वातगुल्मनाश॥ ॥ ज्ञातावत्रिसयव्याहं सोव
 आलकसग्यकूलेभृतजितयिवताप्रमगुदश्रोडसर्कन
 यितासुग्दाहृष्टुलघ्नसंश्रयाहृत्प्रजापद॥४॥ यितुंउतनाश
 हिगुमयितुकंश्रावत्रयनाजीवयाहृयायाथयेवसहृत्
 त्रयमानिकुसुदुतिउक्तादकनयातवीकहृष्टतुविनाशनं
 श्रमगुत्रनाश॥ ॥ गंधर्वसुत्रवनेसुहिगुश्रांसंयुत
 उक्तादकनयातवीगुत्तदुतिगिदाहंवे॥ यथा॥ ॥ कहृयि

मा तसमावृत्तशून्यकारिहवद्वती त्रिकुलवतिर्गुत्रैर्न देवप
 त्रिनामकुं तस्यलूनमयतस्ममासनविधीयते ॥ ध्या ॥
 पत्रिनामत्रून ॥ ४ ॥ ॥ आष्मानोतापविष्मत्तुविविधोत्रतीव
 दमेसिद्धिस्तुष्टुसमप्रार्थनातिकर्तव्यदलित्येक ॥ ध्या ॥ ॥ त्रि
 क्षयात् ॥ त्रिस्तुष्टु कदुम्वनवनागनगुत्रैर्गितसमप्र
 ययेतीकस्तूनवूमे ॥ ध्या ॥ ॥ पितृपतीनामशून्य
 कून ॥ ॥ प्रतादिगुप्रतन्त्रैर्मेधवविश्वहेषकंडक

१२

दकैतयातथसद्यशून्यविनाशुनं ॥ ध्या ॥ ॥ हिंउत्रिक
 तुकैस्तुक्तोवयाकुष्टसमेधवउष्मादकैतयाग
 र्थस्तुष्टुत्रविनास ॥ ध्या ॥ ॥ योप्रतागमा ॥ ॥ कु
 ष्टप्रतागमादुक्तसमेतागमनिकोलेमधूसर्यिखाय
 त्रिनामाहुवगुत्रैर्मेधोदुतिस्तदा नूनं ॥ यविनामशून्य
 नाग ॥ ॥ ध्या ॥ ॥ वेदवैनाष्टमामकाशनाहागेववा नू
 विकासस्तुष्टुहिक्काचशून्यस्यापठुवास्तुता ॥ ध्या ॥ ४

मा ३३ नवविनामम ३३ नवविनाम

॥ तिनिदाना कवत्रिकु म ३३ नवविनाम ३३ नवविनाम ३३
विकाल ॥ ॥ वातविद्युत्तुं वाग्गु रू वा ३३ नवविनाम ३३
कृत्वा का सनिदा नां वृत्तो दा व ते सहर्व ॥ ३३ नवविनाम ३३
दावतश्रियवशरा ॥ यथा ॥ ॥ वातमृत्तु पृत्रिखानां संगम
नकृमा नृजा न ० न वा त ३३ ३३ नवविनाम ३३
वातवधउदावत ॥ यथा ॥ १ ॥ ३३ नवविनाम ३३
संगं पृत्रिषस्यत ॥ अ द्वे वात पृत्रिख मा स्या द य वा निम

प्रति पृत्रिखवग्गलि हत न त ३३ ॥ यथा ॥ ॥ पृत्रिषव
गवन्धउदावतया ॥ यथा ॥ ॥ वस्ति म ह न या ३३ न मृत्तु
कुं सिना नृजा म म यिदा व ह रू स ३३ नवविनाम ३३
यथा ॥ ॥ मृत्तुवन्धउदावतया ॥ ॥ मन्मागल रू र गि न
यिका ना रू ला य द्या तां य व ना म क स्य त ३३ नवविनाम ३३
या ३३ नवविनाम ३३ ॥ ३३ नवविनाम ३३
उदावतया ॥ ॥ ३३ नवविनाम ३३ ॥ ३३ नवविनाम ३३

मा प्रममयनादि मिनागुत्सवं न प्रना मयाग्य ह वंतिती
 वृंसहपिनमन॥धया॥ ॥अश्ववन्धउदावतया॥ ॥म
 न्यासुहमिनेमुर मादेता ह्य हवदको ॥दिप्रानां वदेव
 मं ॥व॥आसादि ॥त्रर्क्ष॥धया॥ ॥रुवथुसुहउदावतया॥ ॥४
 कन्धस्यवर्नस्य मतिवताद कृताश्ववायोत्रथवावृ
 विप्रितेउगमत्रयगतिहृत्त ह वंतिनगुविका नायवने
 यता॥ ॥धया॥ ॥उगमत्रवन्धउदावतया॥ ॥क

॥४

कुकोथप्रविशंग ॥धया॥ ॥ममकुना कृषुहृत्ता सर्वेसर्व
 कुदिनिगृहगदा॥ ॥धया॥ ॥कुदिवन्धउदावतया
 मृतागमवेउदकृषाश्व ॥धया॥ ॥रुतामृत्विनागहृत्त ॥४
 गमत्रितकुवनेहववृत्तविका नाविधुत्तगु ॥४
 कुवन्धउदावतया॥ ॥तंदागमदावन्विशवन्ध कृषाविद्या
 त्रकृमतावदृष्ट॥धया॥ ॥कृषावन्धउदावतया॥ ॥कथं
 स्रग्गवन्धवन्ध ॥धया॥ ॥कृषाविद्यात कृमतावदृष्ट॥धया॥

मा एकावन्ध उदावतया ॥ ॥ अतस्य निष्पत्तिं विनीतुं न ह्यु
 गमो दावयवापिगुस्म ॥ यथा ॥ ॥ अतस्य वन्ध्या उदावत ॥ ॥
 मूलंगमदो क्रिडि शती जायन्ति प्राहिद्या ता दयवापितदा यथा
 निद्रावन्ध उदावतया ॥ ॥ अतस्य दितयनिकिषु त्रीनमुत्सेलति
 द्रुतं ॥ सकृदमत्तमतिमानु नूदावती नमूत्सु ॥ ॥ यथा ॥
 उदावतत्रसाधुसकृन् ॥ ॥ अतस्य मूत्रकमादेक वर्षात्तम
 तपसकं श्रवतह नयासु यत्नान्नद्यत्तपस्यत् ॥ ॥ ना

सप्रत्ययमानय उदावतविम्वत ॥ ॥ यथा ॥ ॥ उदावता
 नागनास उदावतया ॥ ॥ अतस्य विद्यानियतं कुमनर
 याविवन्धद्विगुनानि ननयवतमानं नत अश्वमनविका
 लमानाह मुदाहवति ॥ ॥ यथा ॥ ॥ अतस्य नरकन ॥ ॥ तस्मि
 नतवत्यामसमूहवतु ॥ ॥ अतस्य विद्याप्रतिविद्याहवि
 अमासमग्न नमूत्सु त्वं ह सुं ह मूत्सु विद्यातन
 च सुं मूकशी यस्मिन् विषमूत्सु त्वं मूकाग कृतम्

मा
श्री
ना
द
रा
ज
के
सो

कृदिमसरयकागमजहवंनि तथारथकानियलक्रनानिथग
शानाहलक्रन॥ ॥ववाहयायिठकमावशकसुयिंयत्रीवातिवि
वाशकृष्टउक्तांमृनानाहविमूठवातानुवीत्याजमदाश्ररभा
दनाभि॥यमा॥ ॥ववादिदूर्क॥ ॥रुमिनोदानोक्रयत्रिकुम
शानाहविकित्साधिकार॥ ॥दृष्टावातादयाल्यर्थमिथ्याहार
विहात्रिनःकृष्टंनिपंरक्षगुप्तंकोष्ठांनगंयिद्रुविन॥यमा॥
थगहंरुगुत्तमनक्रन॥ ॥तस्यपंचविधंस्मानपार्श्वहृनाहिवस्य

त्रि३

हवस्मात्रंतप्रगुनीसंचात्रिपदिवाचलवृत्तश्चपंचमावाह
गुत्तमंरुतिकित्तितसंयुक्तेजोप्रतदावेसमहेतयिवाहृतेप
नुराणांतथाम्नीनांरुयावकेतरायप्रउतगसतवाहृत्ययुषवद
मृपुक्रमग्रांतविक्रजनानिआहापमाणातमयकिशकिमा
सन्नगुत्तमस्यवदतिविद्म॥यमा॥ ॥गुत्तमदूर्वद्रुपत्रक्रन॥ ॥त्रु
द्रुचिकृद्रुविमूठंवाततीव्रविक्रजनआहेनोह्मद्विवायुर्वसर्व
त्तमेषुत्रक्रम॥यमा॥ ॥वातगुत्तमनक्रन॥ ॥गुत्तमनक्रनयः

मा न स स्म न नू जा विकल्पं विद्यात्सं गंग तव कुश्व ष ^{४२५} वा नूनं
 स्वंगिगिल ठ नय हृत्कृत्ति याश्च गंगि प्रा नू जश्च क प्रा त्य जी
 ह्य वि कं प्र काय ह के मृदुत्वं ग मू ये ति यश्च वा ता स सुत्मा
 न च तत्र नू क षा प्र ति कं क तु वां मृगं वृं ॥ यथा ॥ वा त गुल्म ॥
 ल क्रन ॥ ॥ मा तु लूंग तश्च हिं ग दा डि मं वि द से न्व वं सुत्ता म
 द न या त वं वा त गुल्म नू जा य ह ॥ यथा ॥ वा त गुल्म ना ग ॥ १ ॥
 ठ त पि या सा व द नां ग ना ग ग त म ह शी ॥ ये ति ला त ने च स्व दा वि

वी दा हा वृ ह् व ग्ग गुल्म स्व ग्ग ह धे ति क गुल्म नू यं ॥ यथा ॥ ॥ यि
 त गुल्म या ल क्रन ॥ ॥ दा क्रो त मा त स ग्ग उं धे ति क म गुल्म यि व ॥ य
 य ॥ ॥ यि त गुल्म ना स ॥ ॥ सु मि लं गी त ज त ग्ग र सा द हृत्ता स
 का सा नू वि ग्गे त वा नि शे ल्यं नू ग ल्या क यि ना न त ल्यं ॥ गुल्म स्य नू
 या नि क ल म क स्य ॥ यथा ॥ ॥ क र गुल्म त क्रन ॥ ॥ य मा नि वृ
 र्ति तं त कृ वि द न ल व ता खि तं यि व त्सं दि च नं च व मृग व शी नू
 थ कं ॥ यथा ॥ ॥ ग्ग म गुल्म ना ग ॥ ॥ म हा नू जं दा ह य त्रि त म ग्ग व

मा कृमि हृदा गत्रकन ॥ ॥ विष्मलकाथममृत्रं किमिह दोग
नासन ॥ ४ ॥ का मृमादाह मृमवधुमासेषामृवदुवाकिर्मि
किमिजातिनां भुषिका नावम ७ मता ॥ धयो ॥ ॥ हृदा गत्रकन
नत्रमृम ॥ ॥ ॥ तिनिदाना कृपतिकमहृदा गत्रिकित्साधिका
न ॥ ॥ यथमृना ४ स्वेकानिदाने सधोथवाकापमृप्यवसे ॥ १०
मृमृमाग्नयत्रियोजमनी यदातदा मृमृहृकृ ७ ॥ धम
मृमृकृकृहृ ॥ ॥ तिजातिमृमृकृनवसि मृमृस्यमृमृमृ

मृमृतिहवाता ॥ वातमृमृकृकृया ॥ ॥ मृमृतानागलंकात्रि
वाडिगंकात्रिकंथकानुपाद्यदातनागमृमृमृलवान् मृमृ
किमृवान ॥ ॥ ॥ यीतेसुलकृसमृमृसदाहृकृमृमृ
मृमृयतिहोपदा ॥ ॥ यिमृमृकृकृ ॥ धयो ॥ ॥ हृलितकिमृ
कृलगाडवृकृपाखातधन्यंयवासकातांकांथयिवत्मा
त्रिकमृमृयकृकृसदाहृसमृमृविपवत्मा ॥ धयो ॥
यितमृकृनास ॥ ॥ वृमृगतिगंमृमृमृमृमृमृमृमृ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यिद्धं कुरु मूत्रकृच्छ्रं ॥ यथा ॥ ॥ अथ मूत्रकृच्छ्रं ॥ ॥ मूत्र
 न स तत्रावायिकं तीक्ष्णं न वा कुरु कुरु विना सायं ॥
 कुरु विष्णुदिव्यं ॥ यथा कुरु कुरु नाश ॥ ॥ सुखोति नृपा
 निरुसुनिवाता ॥ हर्वन्ती तक्रिकु तमन्तु कुरु यथा ॥ मूत्रकृच्छ्रं ११
 सन्निपातया ॥ ॥ अथ लज्जामुविष्टं प्रधुना सह याजितं मू
 त्रकृच्छ्रं निरुप्ता सुत्रिणा ॥ हा न सं सया ॥ यथा ॥ त्रिषोदो मू
 त्रकृच्छ्रं नाश ॥ ॥ हृन्वी दा व यथुलं कुरु वनिचकृच्छ्रं ॥

79

तथा हवति मुक्तावमृत्तु कुङ्कुमदा नूनं ॥ यथा ॥ ॥ असाधम
 त्रुक्कु ॥ ॥ नितिनिदाना कृत्यलिक ममृत्तु कुङ्कुमिकि ॥ असाध
 कान ॥ ॥ जायेत कुपिते दीर्घे मृताद्याता त्रुमा दगयाया मृगालि
 द्याताद्येद्योत कुङ्कुमिका दग ॥ यथा ॥ ॥ त्रुमा दग विद्याता द्याया
 यव ह्मो सवदन मृत्तु मा विग्ध्यवर्तति विगुन कुन्दनी कृत मृत्तु
 मस्यात्वमभवा सत्रुई संयुवर्तत वात कुनिका तां तु आधि वि
 द्या सु दा नूनं ॥ यथा ॥ ॥ वात कुन्दनिका अपत्ररून ॥ ॥ असाध

मा य प्र व सि गु उ लु ध वा य म्ब यान्न त क यो ती वा ति म ॥ ४ ॥
 नां मृ त्र वि द्वा ग्ज् प्रा वि ती ॥ यथा ॥ ॥ मृ खी त्ना त म ॥ ४ ॥
 मृ त्र तं ग्व त व ल्य वं व सि कु त्रि नि धि तै दि वा त व सि नि
 ति रु या आ धिं स कृ कृ सा ध न ॥ यथा ॥ ॥ व सि मृ त्र त रू न ॥ १२
 चि त्तं ल म त मृ त्र ल यो त्रे न य र्व त त म ह मा न स्य मं द लं
 मृ त्रा ति त स उ अ त ॥ यथा ॥ ॥ मृ त्रा ति त ना म ॥ ॥ मृ त्र स्य
 व ग ली ह त त दू दा र्व ह रु क त्र यान कृ यि ता वा य् ल द न
 त

य त्र यं दू र्म ॥ यथा ॥ ॥ मृ त्र उ ० ल ना म ॥ ॥ व सो वा य्य थ वा
 ना लो म नो या य स्य द हि त मृ त्र य त स ह त स ज कं वा य व त
 त मृ व कृ तै त ल्य म ल्य स त्र उ वा थ नि र्ज नि डे
 ना नि ल उ आ धि स मृ ग्ना मृ ग गं गि त ॥ ४ ॥ यथा मृ त्र मृ ग न म ॥ ४
 न रू स्य क्रां त द द स्य व सि सो यि त मा न रू ती मृ त्र कृ यं स न रू
 ग्दा हं ज न य नो क दा कृ य त्र त व सि मृ ख वृ त्ति सि ला ल्य ॥
 स ह ४ सा त व ४ ॥ मृ ग्म त्रि पु त्र य र्व सो मृ त्र गं यि स उ अ त ॥ यथा ॥

मा मृगं न्दी नाम ॥ ॥ मृगि तस्मा मि यं पातो वा प्र नाऽऽ कु म
 ह तं स्मा ना श्रु तं मृ ग य तः १ प्रा क य म्म दा य वे त तं ॥ य मा ॥ ३
 त स्मा दे क प्र ति का मं मृ गऽऽ कु तं द श्रु तं ॥ य मा ॥ मृ गऽऽ कु ना म ॥ ४
 आ मा मा म्म त ये यि त व स्मि या य्या नि ला न्वि तं व स्मि म दृ ऽऽ य्य
 व द्र द ह स्मा व य द ध मृ ग हा रि द्र म थ वा स नृ उ न क म व य ॥ ३
 क क्का ल्यु नऽ यून जं ता नृ ष्व वा त व दं कि तं ॥ य मा ॥ ॥ उ क्क ग्रा सा द
 ना मऽ ॥ ॥ यि तं क र्हा दा व यि वा स ह म्म त नि न न य ॥ क क्क म

१ त दा पी तं न कं स तं घ न स्त उ १ स दा ह ला र ना नृ क्क मं व
 व क्क ह व व त १ उ क्क स म स व क्क म्म मृ ग सा द व दं की तं ॥
 य मा मृ ग सा द ना म ॥ ॥ नृ क्क दू व न यो वा न ना दा र तं ग क्क य थ
 मृ ग म्म ता नृ य द्वा त वि स म्म ह क दा ल नऽ वि स ग मृ ग य ॥
 क क्का १ वि द्वा द्या त वि नी दि ग ॥ य मा ॥ वि स म्म क्क ना म ॥ ॥ दु ता
 व न य ना मा सै न ति द्या त प्र यि ज ना ॥ स स्मा १ ना व स्मि न
 द त क्क ल ति थ ति ग ह व त् ॥ १ उ ल स म्म द न दा हा तो वि द्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विद्मस्व त्वयि यीति मुसुर्द्धा नासुर्द्धा वेदनातिमान् ७॥
वस्ति कुंदलमाह सुंधा नगं मुविषावमन ॥ यथा ॥ ॥ आस्मीत्यु
तात्वीतदादशुनं मृत्रविवर्द्धतात्तथा नोत्तैलवर्द्धयमिग्वं म
त्रयनं गितं ॥ यथा ॥ ॥ अथ गवत्तुलककाथककं युकं घृतं
यिव ७॥ मृत्राद्यातं मृत्रदाषशुकदाषवदायनं ॥ यथा ॥ ॥ अ
न्यादिघृतं ॥ ॥ अथ नृक्षविलावस्तिपितादिर्क्षनस्तिथ
ति ॥ यथा ॥ ॥ अथ वृक्षानुविलसत्तथा नयत्तु कुंदलीकृतस्याद

१४

सो कदलिरुतं हत्मा हत्मा सुत्र वय ॥ यथा ॥ ॥ ॐ ति नि दा
 नकु म मू ग्रा द्या त वि कि ल्पा ॥ ॥ वा त यि त क हे मो ठ मू य तु
 अ ३३ क जा य ना छा मू ग्रा द्या त वि कि ल्पा ॥ ॥ वा त यि त क हे मो ठ मू य तु
 मा ॥ यथा ॥ ॥ वि ३३ व यं द लि ग तं सु ३३ कं मू तं सु यि तं य व
 न क हं वा ज ता सु दा सु य प ज य त तु क म न यि त वि व ना य
 ना ३३ ॥ यथा ॥ ॥ मू तं व सु स गं लि त मू त क कं ठ ला नू यि
 सा मा न्य लिं ग नू क्रा नि श व नि व सु मू द सु ॥ यथा ॥ ३

मा विजिर्ह मरुत्तया तया माग्बविलाधने तद्यया मा नृष म
 ह द र्क म म द का ये म ॥ यया ॥ ॥ त सं क्रो ता क्रो त सा मे मा मा
 म या ति नृ गृ वे ४ त त्र वा ता दृ ४ म न्या ता द ता व्यो द मे ति व य
 त ॥ यया ॥ ॥ गृ क्रा ति म ह न ना ति म्या ७ म त्य नि स क्त न न ७ ७
 सा नि त मृ य ति स कृ त मू ह म्मं य ति विं दृ ७ ॥ यया ॥ ॥ ४
 गुं आग्नि म क्क पा बा र्ग वि ल व नृ न ग्म क्रू ने श्र त या त म्म व
 ह ने का थं क र्मा दि च कृ न ४ ना म थं त्रा त ने व ने श्व क्क कृ त्वा

यि व त्त न श्र स्म ली मृ त्र क कृ द्वा दि य नं वा य न य त हं नी
 को षा ग्नि त वा त क प्प नृ गृ द म रु जै ॥ यया ॥ ॥ वा त स्म ति ॥ ४
 स्था वा नृ त्रा नृ ना वा ग्म स्था वि ता क थं के ॥ ४ त्रि व यि ते न द क्क
 ने व ति य य मा न न् वा य म् ॥ यया ॥ ॥ व नृ ग त्व क गि ना
 त द गृ ठि ग्म कृ न क कृ त क र्वा य त्रा न सं मू कं गी क्क ना व ती
 ने त्य यि ॥ यया ॥ ॥ व नृ ना दि ॥ ॥ ग र्ज वृ नृ न का दो तु गृ म्
 त्र ना रु त नृ ति कृ ष्ट त्र डा दि म त्रि च वि त्र के स सृ ना रु म्

मा ॥ हिंसे नैव धर्मसु त्रयानि तं शुभं त्री रूपयथा शुभिकता गच्छति
 ता ॥ ॥ अथ तदुपद्रवः ॥ ॥ ॥ तिदानपनी कुमज्जुमी विविक्ता
 धिका त ॥ ॥ अदम्भं न संभजनी तदुभय क दं क र्हा वसि गतं पु
 द्भ ॥ क नो ति म हा न्य म दि र्क म्भु ता वै वै वापि तं य वि दु ष्य वा ॥ ॥
 वि ॥ ॥ किं ज प्र दा य था व क्थ्य धा तु सं दृ ष्य म हा न् क र्त्तु त सु नि ष्य
 त सा ध्या क र्हा का द ग यि क्ता का र ॥ अ द्मा प्या न सा ध्या ४ य व ना
 च तु ष्ठ ॥ ॥ दं ता दि नां म ना ध्या त्वं प्रा ग्ग य पा नि वा द प्रा दा ह वि क्क

म ता द हं ए का हा स्यं व जाय त ॥ ॥ दा य द्वा वि स्य ष न त स्तं या ग वि षा य
 त म्भु व र्त्त दि र्द न र्दा म्भं वि क ल्य य ७ ॥ ॥ अ क्तं व ह्म सि तं गी तं
 नि र्गन्ध म्भु द का य मं म्भु द क म्भु न किं वि र्त्त वि त्र पि क्ति र्त्त ॥ ॥ अ उ
 द क म्भु ना म ॥ ॥ या गी जा त क र्वा ये न उ द क म्भु वि ना म्भु म्भु ॥ ॥
 कौ र म्भु मि वा ल्य र्थं म्भु त्री व क्म म्भु त ॥ ॥ अ व दि क्त्त र्त्त र्त्त र्त्त
 क्म म्भु वि ना म्भु ॥ ॥ सा यी र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त म्भु न म्भु त ॥ ॥
 म्भु य र्त्त क र्वा म्भु न सा य म्भु वि ना म्भु ॥ ॥ सु ना म्भु सु ना तु र्त्त

मा मय र्म सु म धा धनं ॥ यिव निंम्य क र्वा यन सु ना म हं वि ना ४५ य ॥
 सै द षु ना मा यि षु न यि षु व ध ह नी सी तं ॥ ॥ यिव वृ ष्ठी णि क र्वा य
 न भि ता म हं वि ना ४५ य ॥ ॥ गु का रु गु क म हं वा गु क म हि यु म ह
 ति ॥ ॥ अ हि कि तं ज दि म ल्य क वि ल्य क सु म या र्ध ति ज्ञा मा यि य त सा ज्ञा १८
 ति वि र्वा ना ग नं त था सु नु द्र ये व स म् क म् वा नि यि य नी नि य ज्ञा ति ह नं
 ४५ न वि जं द्रु व नं स म् सु ति तं ॥ द धि वा नी अ र्वा द वा र्म ना सु न म् यि वा
 गृ ह नि मा न तं यि तं व ना मा य त व र य त् ना ना न्नु ह वं गु तं ॥ अ ४५

सि न क वा हि नी ॥ ४५ ति सा ति ॥ स क षु य अ सा धा सा ध य न् वं ॥
 नि तां क सि क ता म हि सि क ता न यि ना म तं ॥ ॥ गी त म हि सु व द्ग य
 म ध रं ह सु गी त रं ॥ ॥ गी त्रे ४ गी त्रे म न्द म न्द य सु र म र्म हं वि ना ४
 य ७ ॥ ॥ अ गु धं व क र्वा यं वं अ सु म हं वि ना ४५ य ७ ॥ ॥ क षु क
 ट ज वा पा था दिं गु ति क तु ना हि नी गु द् वि ते ४ क र्वा य न सु यि
 म ह वि ना ४५ य ७ ॥ ॥ अ भि वा का न वि षु दि नि द्रा वा ४५ ४ सु
 यि न म् ॥ उ य द्र वा यु ज्ञा यं त म हां क क र्द ज न् य नां ॥ ॥ व सि म

मा ह न य स्तादा मूका व दान नं न ४ दा ह टका सु का मूका विदु दं
 धि क न न नां ॥ ॥ वात जा सा न दा व कु क प ह ह या त ना ४ न
 म त्रि द ना ४ म ४ का ४ ४ स्वा स य जा म ॥ ॥ य थ का प ड वा त्रि य म
 ति य ४ न त म व य पि टी का धि डि तं ग टं पु म हं हं कि मा न वां ॥ ॥ पु
 म हि ना म दा मृ तं म ना विल म यि च्छि तं वि ४ दं । व ति क क तु कं त दा
 रा गं य य कृ त ॥ ॥ ४ रा वि क क कृ पि का ज रि नी वि न ता ल डी म
 सु रि का ४ व यि का य रि मि सु वि दा त्रि का वि ड वि उ व टि पि ठि का

॥ ८

उ म ह वि च्छि
 ४

पु न न कृ या द ४ ॥ ॥ द म यि डि का जि ता ज ति ॥ ॥ ॥ ॥ सुं वि म र्म
 सु जा यं त मा स न व र व व सु ॥ ॥ सा य ड वा द र्व सा न ४ पि जी का ४ य व
 ज य ॥ ॥ ॥ ४ ४ म मा म ४ सं क्री ला मा ह हि क्रा र म ठ ना ४ वि स य
 म र्म सुं वा धा यि दि का ना मू य ड वा ॥ ॥ य न यि दि का क कृ या ड य ड
 व ॥ ॥ ॥ ति नि दा न य त्रि क म य म ह वि कि न्सा ॥ ॥ म द सा व र मा
 र्ग स्वा न्य य्य य य व धा त व ॥ म द सु री य न त सा द ४ क ४ सु व क सु
 कृ ड स्वा सु र्वा मा ह स्व पु कृ य न सा द ने ॥ ४ पु कृ कृ स्व द दो र्म

मा विप्रस्यथा ह्यस्य मेयुन ॥ ॥ भदसावृतमार्गत्वा वायुका वविमष
 तत्त्वदसंगभूतमयमीमहा नृमषयित्यपि ॥ ॥ तस्यासिद्धिं न
 यस्याहातं वायिकर्षति ॥ विकात्राव्यसूतं यो नास्ति त्विह न वृत्तिक
 मा ॥ ॥ नृतां वयद्वकत्रो विमषादग्निमा नृशो नृशो हि दहतं सु ॥ ८०
 त्रं वनं दावान शोयथा ॥ ॥ स्वयं विप्रिकषा यदि गुप्तो वयलातिमान
 सुनामहसंघीतामदाध्यावंद्रिदियनं ॥ ॥ हृत्तुमंति कुरु कंठ
 ते रं रं नावि तं व सामान वयाननकह मदानिलायहं ॥ ॥ म

स्यात्तव संवृद्धं सह सेवानिनादयः विक्रात्राव्य न नाकृत्या नाभ्यं त्या
 गुक्तिवितं ॥ ॥ मदासातिवृद्धत्वा ह न सिद्धं नृमषयित्यपि ॥ ॥
 वयासाहान नाति सुत मयानं ॥ ॥ ०० तिनिदानयत्रिकुषं सुत रा
 गयिकित्वा विक्रात्र ॥ ॥ नृ सुदासुवाहिनी वाखा ४५५ तासि संस्म
 ताया नाग्युयानासंदूष्यजनयत्युदनं नृमं ॥ ॥ आध्यानगमनं
 सिद्धो ब्रह्मं दुर्वनामिता ५४ सुदनं मंगना संग्यदातयुतिषया
 दाहंतद्रायसंबंधजयनयुर्वैरं किहि ॥ ॥ यथारुषः ४ सुमस्ते ५५ ॥ ५॥

मा श्री ह व द्वा क्ता द के ॥ ॥ सं ह व ल्प द ला य द्यो त्वां तिं गं व थ क ५२ ॥
 न त्र वा ता द ल ग्ग व अ ३ वा नि या ना ति कु। ल कि ष ॥ ॥ कृ क्रि या उ र्ध्व द न क
 ति य व य व र्ध रं द नं ३ ३ क का ग्ग क म दी क्षा ३ न ता म न सं ३ हा ३ भा वा
 न न ल्य ग्ग दि ल्य म क स्मा त् प्रा स वृ द्धि व ७ ॥ ॥ सु ता द ह द मू द नं त न
 कृ ष्मि ला त तं ॥ आ वा नें द ति व क्क वृ न्य ह तं पृ क प्रा ति य ॥ ॥ वा य
 ग्ग त्र स र क्ता न वृ वृ वि र न स र्व ग्ग ति ॥ ॥ कृ ष्म दं नि य व क्ता न
 आ ति न व नं व वा अ ज्ञा जि दी प्य कं हि ३ स्व जि का र व वि त्र कं

७१

३ वि वा क्ता र सा पी ता वा ता द न ह लं व नो ॥ ॥ पि ता लो त नं ज वा मू क्ता
 दा ह र्क द्वा क्ता र ॥ त मा ति सा नं यी त ल्य तु ग्ग दा वृ द नं ह नि ॥ ॥ पि
 त गं म ग्गि ला न हं स र्ध दं सा षा द क्ता धू मा य ति मृ द् स र्व ग्ग क्रि य वा
 कं य द्वा य तं ॥ ॥ वृ ष्म व र्ध व दि सा न य वा वा ल ति क थ कि त्री ॥ वृ ष्म
 र्ध व वा वा यि ला क्ता ना ग न सा धि तं ॥ क्रि नं यि ला द न ह लं मि ति पि
 ता द लं क्ता ॥ ॥ अ वा द नं ग्ग ह द नं स्या य ग्ग य थू ग्गो न दं नि

मा द्राह मा न वि स्या सः का सः कु ल्व गम दि ता ॥ ॥ उ द त स्मि मि तं मि
 गं कु । ना डि वि तं म ह ७ वि ना ति म्दी क थि तं गी त स्य र्ग ग न
 स्मि तं ॥ ॥ य मा नी चै से वा जा डि यो ष यु कं क हा द नी य म मू क्ता
 मू ना त त्र क हा द न वि ना ग य ७ ॥ ॥ रि मां न वा नं न ष ना म मू त्र
 वि खा त वे य क म सा धू व ता ॥ य स्मि न्य य कं त्र न या ग नं म्या दू षां
 मू दू षि वि ष म्भव ना ज्ञा ॥ ॥ त ना ग्गु न कं क थि तां च दा खा ७ क र्क

७२

सु धा तं ज ० सं रि त्रिं गं गी त व वा न त ७ ७ दू न य वि षा ष त क् व्यं ति द
 क्र त य ॥ ॥ सु धा तु ना मू क्ति हि पु षा कं पां दू क ७ ७ षि ति व त्र
 क मा य दू षा द नं की र्ति त म त वै दे षा हा द नं कि र्त म ता नि षो ध
 वि दा क्ति नं दि न त स्य नं जं ता य दू ष म ल्य थं म ह क र्क र्क र्क
 हा ति वृ षिं कू न त ७ पु व षो षि हा द नं तं पु व दं कि त स ॥ ॥ त हा म
 या र्क य त्रि वृ षि म ति वि ष ष त सी दं ति या तु ना पि ७ मं द ष ना
 मि क र्क पि त त्रिं गं ७ न य क र्क ७ कि न व ना ति पां तू ॥ ॥ वि त्र कं ग

सा टिका कार्य गहे संकद निरु वंत श्री मधं ल क य य ४ यी हा द न निवा
 न नं ॥ ॥ सु आ म पा र्ण यु क्रि ति यु दू षु रु यं य क्र दा र त न त द व ॥ उ
 दा व र्क रू जा ना हो मा ह तृ दा ह ने ठ ने ॥ ॥ स य स्या न म न्यै र व न व
 यि ली र्वा म ना ऽ म रि र्वा यि ली तं ज अ व ॥ ॥ सं वि य ते त स्य म न ४ ८३
 स य दा षे ४ अ ने ४ अ ने ४ अ ने व तु ना आं ॥ ॥ नि रू धा त त स्य गु द य
 नि षं नि न ति कृ कृ द यि या त्य म स्यं ह ना ति म ध्य पू त्रि वृ वि म ति
 त था द नं व द गु दं व द नी ॥ ॥ ग त्थं त था नो व दि तं य द तु नृ कं

रि ग त म स्या था वा स्मा ष्ट कु तां क्रा त्म नि न य का ४ ४ अ व श य द्दे गु द त
 रु त्र य ॥ ॥ ना र्ह न ध ऽ म द न म ति वृ दि त्ति रु द्र त क त्य म था ति ना
 त्रं त त स्य त्रि गु ण द नं प्र दि वं द का द नं की क य ता नी यो ध ॥ ॥ य ४
 स ह यि ता व्य नृ वा सि ता वा वा ता यि नी को व्य थ वा नि नृ ध ॥ यि व ज्ञ तं
 जि त न मा द त स्य गु ण तां सि दू ष्य कि हि त द ह हा नि ॥ ॥ मृ हा व त्रि
 क ष थ वा यि त रू द का द कं वृ र्ज व द त्म य ति ॥ ॥ सि ग्गं म हा
 तं य त्रि वृ द ना रि स म स्य तं वृ न्म मि वा वृ ना व य था द ति कृ त्ति

ॐ
मा

गृध्रेऽसुवेनतिद्यात्तद्विद्यादयि॥ ॥सुमेधवस्यादनवस्मिन्त्यं मासं
धसुव्याथमिनातनृत्यं सुग्रीमहर्षसुविवद्वृतायसामान्यलिंगंभव
अऽपुदियु॥ ॥यत्रैरुनलवृक्षरूपावृक्षसितऽपसुकीदृष्यार्थिप्र
शान्तिमिततऽ॥युग्मंमतिप्रोन्नमतिपुयिदीपादिवावलिङ्गमाव ८७
थुसमित्रना॥ ॥तुवृत्तवित्तकंयथायमानावित्तुमेधवं।गन्धि
यथाचाजमादानिर्गन्धिषाषकंसमां॥आवआमंभग्धरुवग्ध
ष्मिकयात्रिमंदऽ॥तुवृत्तादिमितिरव्यातंसर्वमात्रतदाव

जि५॥ ॥मृदूऽसुमेधमिषातनागवांनृगुमहत्रसुदतृषामंद
जित॥४॥ ॥यउस्यंस्ववृगद्विनागकुत्सवित्तुअथातृषा
हवाकवाकवांन॥ ॥यथाविकित्साहुडाज्ञाथानंगभक॥ ॥गु
त्रऽसितवांनुत्रशायकांनितऽपुसंकनिद्रावमिवंद्रिमांशुकु
सकृकृजसपुष्यमानिवाडितानवात्रमदातिवत्रिकरुत्सक
वयाविकित्सावृषातसज्ञायधुना॥ ॥निद्रानाकुतिसस्यैकृवथुऽ
स्यादिषाषज॥ ॥सर्वकृतिसंनिधातांअथावामिभुत्रकुना॥ ॥यि

मन्त्रेय विद्या

दोर्वल्यं ग्वत्तवदु वलंगुह ॥ ॥ ज न को पद व कृत ४ व थ ४ वा
 द ४ मूनिग ४ पू न वं हं नि ना ती मू मू ब जा गु प्र जी द यं ॥ ॥ न
 वी न पद व ४ ग्व व ४ सा धा सा धा ४ पू त ति त ॥ ॥ इ ति नि दा न व नी
 क म श्व व वित्ता वि का त ॥ ॥ मू का र्व कू न ग ४ वा य रू न को ला हि ७०
 बा हि नी ॥ ॥ पु ला अ व म नी वृ हों क ना ति रू न का य या दा य म म दा
 मू ग र्क ४ स वृ वि ४ स क म ग त ॥ ॥ मू ग र्क अ व व नि न द रु ह द
 मू क व लं ॥ ॥ न ग व कू द ति मू ग व ल क वा ता द ह तु न कू ॥ ॥

गुणुले वंनुते वंवायुमूठे वयि वल्लन॥ ॥ वात४ वृद्धिं निहंत्य
 ४४ वि न का ना न वंनु नं॥ ॥ पक्का दू वल्ल सं का ४४ यि न दा हा
 ४४ वा क वा नं॥ ॥ वंदनं मधुकं वम्ल उगा नी
 लउत्पलं क्री नयि वृ४ वृ न प४ स्मा दा रु४ ४४ थ न जा व हं॥ ॥
 क हा कि गाउ त्र४ मि ४४ कं लु मा क ४४ ना ख त्र कू॥ ॥ त्रि
 गुति रु ला श्र न त्र व नं की ४४ वा ति ल क रु वा गा म का ४४
 व वि ल कं क रु दि वे न तु॥ ॥ कृ ४४ म्हा दा वृ त ४४ यि तं दि व

मा लिंगं प्रकृता ॥ ॥ कुरु वलं दसा वृद्धि स्मृदु स्मा लं यम
 मृदु अ न नगी ल स्म मृदु ज स्म तु ग कृत ॥ ॥ अं हो ति ४ पु क्र
 द गि व का रं या ति स त्र ग्म दू ॥ ॥ मृदु क कु म व ४ स्म व व त्र य
 रु त का व था ॥ ॥ मृदु क कु धा य ॥ ॥ वा त का वि ति वा हा त ४
 गी त ला या व ग म ह ने ॥ ॥ अत न त्र ति ल ला धा वि ष मा गी प्र व क ने ॥ ४७
 को र ने ४ पु वि तो न्ये च कृ दां न्य व प्र व य दा ॥ ॥ य व ना वि गु नी
 कृत्य स्व नि र्य म द ध न य ७ ॥ ॥ कृ य दं क न सं वि ष गं था त म

य धं त दा ॥ ॥ ड य कृ मा न स्म व मृ क वृ द्धि मा धा न त्र सं त व ति स
 वा म् ॥ ॥ प्र वि णी ता म् ४ म न वा न्य ७ प्र वि प्र धा य यं ले ति वू न ४
 मृ क ॥ ॥ अं न वृ द्धि न सा धा यं वा त वृ धि स मा कृ ति ॥ ॥ त्र कृ कृ
 का ल न गी ता त म् ४ जा त ग वा कृ ति ॥ ॥ अं न वृ धि त कृ न ॥ ॥ अं ति नि
 द न प ति कृ म वृ द्धि ला ग वि कि त्वा वि का न ॥ ॥ अं न वृ द्धि ति ष्यं वि
 गु र्वा म स व ना न व यं ग त ॥ ॥ क लो ति ग न व द्वा ओ दा वा वं कृ न सं
 वि ष कृ ल गु ना र्ग सा दा व तं व च मि ति ति दि म् ७ ॥ ॥ तृ व म

तं कुरुते न कल्क यथासमं नृद्वये ॥ कृष्णसंन्यवसंयुक्तं वृक्षमोग
 हं वेलं ॥ ॥ ॥ सिद्धिदो न वलिकु मयं धु मयि किं लोकि नृद्वये
 वात ४ कुरु मगिग नृद्वये मयि तु संशितं कुरु मयं वमं द ४ कुरु मयं
 गं तुं कुरु मय ४ स्वलिं गे ४ मयं न्वितं तं गं वमं द मादु ॥ ॥ यग न गं द मा
 खं ज्ञाया ॥ ॥ मादां न्वितं ४ कुरु मगि न वन द ४ मयि वा न ना वा य वना म
 क मय ॥ ॥ या नृद्वये कुरु मयि नृद्वये वा को मय द कुरु मयि क मयि नृद्वये
 वे ल मय मय स्य वत स्य जं नृद्वये वत मय मय मय मय मय ॥ ॥ ॥

नं ४ स र्धं कुरु नृद्वये गं तुं गिग मयि मयि क ल मय क मय ॥ ॥ विना
 रि वृद्धिं तं जं न्वि नृद्वये वत मय मय मय मय मय मय ॥ ॥ माधु मय
 मा मय स्य वत स्य जं नृद्वये वत मय मय मय मय मय मय ॥ ॥ सिद्धि मय मय
 वा तु नृद्वये गं कुरु मय मय मय मय मय मय मय मय ॥ ॥ वत वत मय
 द द मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय ॥ ॥ सिद्धि मय मय
 स्य वत वत मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय ॥ ॥ सिद्धि मय मय
 नं ल मय नं कुरु मय मय मय मय मय मय मय मय मय मय

मा नूनंभीष्टं विनश्यत्सि गच्छ कोखा ॥॥॥ ॥ सुधार्थमूक्तमधुवा
 सुविजं सकालिविजं नडनि समतुं ग्यजिद मूलं सुमिगाव
 युक्तं खाद दिन वंगल गंतु सुवो ॥॥॥ ॥ कृकृकृ सुक्तं मृदुम
 वंगतुं संमत्स नाति तम भाव का तु ॥॥॥ ॥ की न व वे द्या गल ग २०
 लुयुक्तं हिं न स न चापि विवर्जय कं ॥॥॥ ति नि दा न व त्रि क्र म
 गल गंतु वि कित्ता ॥॥॥ क कं धू को ला म ल क प्र मा ले ४ क क
 सम आग न व कृ न स ॥॥॥ म द ४ क हा त्यां वि न मं द पा के ४॥

ह्या गें सु मा ना व ह रि मृ गंतु ॥॥॥ ॥ कृ ग नु य ४ क वि द वा क वा का ४५
 वे ति नं ग्य कि व वा य ल न्य ॥॥॥ का ना नू व न्ध वि ल न्ध न क्ष ति मे वा य
 वि ति प्र व दं ति के वि ॥॥॥ ॥ सु र्ष पा नि ४ व ग ली द ग्य ल ह्वा ट के ४
 स ह क्का ग मृ गे न संपी र्णं म य वि द्धुं प्र य नं ॥॥॥ सा ध्म म ना पी
 न स वा र्ध सु ल का ४ न कृ दि यू ता न सा ध्म ॥॥॥ वा ता द प्र मां स म
 सु ४ दु ४ ४ सं दू य म द ४ व त थ गि ना य ॥॥॥ वृ ह्ना नू तं वि ग भि तं तु ४
 थं कृ र्ण नो ग न्ति ति ति प्र दि ४ ॥॥॥ अ यं म्म नं दू ग्य न तु द्वा नं व प्र ह स

मा नमश्चानिहियन्त॥ ॥ कृष्णामृदुवस्त्रिवाततश्चहिंनः ४ पुष्पं दानिलश
शुभं ॥ ॥ दन्दकृष्णधूर्वातश्चयनवयापयन्तप्रकृततिववापित्रकं
सविशाय्यथवापियिरुद्धि नः ४ शुभदूषमतिववाम् ॥ ॥ ग्रीष्मापिवद्वा
त्यत्रजातिकं ४ पिरवानवत्संहननापयन्तं ॥ ॥ विनातिवृक्षश्चकरु
प्रकापादिनं ४ वदुक्कृद्यनयपुयो ॥ ॥ गत्रिलवृद्धिक्रयवृद्धिहानिः ४ व
मिष्टमसलकृद्युगात्तुजम् ॥ ॥ मयः ४ कृष्णजकृतिवाग्रहिंनयित्वाक
ककृत्प्रतिमं वमद ॥ ॥ निग्नैकीसूत्रसंतेनंलांगुल्यामूलकत्किंतं ४ गेलं

नस्यानिहंत्यागुगंतुमालासूदात्रनं ॥ ॥ व्यामामज्ञातेनवनस्यतेसे
नाक्रियवायुमृगिनाप्रतानं ॥ ॥ संकायसंयिदुविश्वयवापिगु
निकृत्नात्यनतमागुदली ॥ ॥ गुनिकृगिनाः ४ सगुक्कृत्साध्याह
वद्यदिस्यात्तुजम् ॥ ॥ अत्रैकैकानुवाप्रवत्रामसाध्वममी
नितम् ॥ ॥ पियविवदुनिय ॥ ॥ स्वद्विकासूतकः ४ क्रयगं वदुक्कृत्सम
सितं ॥ ॥ प्रयाप्रंगदः ४ वेवगुच्चावृदविनाशनं ॥ ॥ गत्रप्रदुजक
विदेवदाषाः ४ संमृक्कितामांसमसृक्कृदुष्य ॥ ॥ वृद्धिस्त्रिमंदवृजं

मा मल्लक मनस्य मूलं विन वृद्धि पाकं ॥ ॥ कूर्वन्नि मासा कु य म ल्य गम टं न
द दू दं सा मु वि दा व द नि ॥ ॥ वा त न यि ह न क रू न वा यि न क न मां स
न व म द सा व ॥ ॥ य श्वा य न त स्य व ल कू ना नि गृ णि स मा ना नि स दा वै ले
नि ॥ ॥ दा षा ४ पु द्वा न धि लं गि रा स सं कू य स यि लि त न मू वा कं ॥
ग म्भ व मं न कू वि मा स यि र्मा सां कू ले ना वि त मा स वृ हं ॥ ॥ कू
र्व न्म त्र मं न धि न पु रू लि म सा अ म त दू धि रा म क म् ॥ ॥ न कू कू य
पु ड व पि ञ्जि यि त्या कं कू र व दू द यि ञ्जि यि त्या ॥ मू षि पु हा ना

द हि ता दि तां ग्म मा स पु द्वा न य व ग्म थं ॥ अ व द नं सि ज
व कू म या क मा त्मा य म म पु या त्यं ॥ ॥ पु द्वा न मां स स्य न न स्य
दू व मां स य ना य न स्य ॥ ॥ मां सा र्ध द स्रं त द मा अ मू क ४ सा अ ष
मा नि वि व रू य व ॥ ॥ सं प्र कू तं म म्म नि य व मा तं ग्म त मू वा य तु र व
द वा त्यं ॥ ॥ य श्वा य न त स्य व रू प र्वा श न कू यं त द य रू द सं कू कं थं ॥ ॥ य
हं द ज्ञा तं य ग य कू म वा दि न रू दं न वृ ह द सा अं ॥ ॥ न वा क मा य
गि क वि कू त्या म दा व दू त्या कू वि ग ष ष त म् ॥ ॥ दा ष सि रू त्वा ज

सिद्धिगणेशाय नमः

थनाश्च तेषां सर्वार्थदाय वनि सग्न नमः ॥ ॥ सुहागंति न क म्भुल न
स्य ददुदानीय ॥ ॥ ॐ ति नि दा ना क र्ण तिकु म्भ गल गं कु मा ला गं थ द्द
विकि ल्पा ॥ ॥ यः सर्वं हो सा वं न्न नं जा ह सा हि ४४५ अ नृ तं वा द ग त ४ कु म्भ
न ॥ त कि य द स्या क्त्वा क र्ण नं त्रि शि ष्ठी षु ना ॥ ॥ स्व पि क वि दा ह ॥ ॥
वा त जं कृ कृ जं नृ जं स्ते ति ति व द नं ॥ ॥ अ नि मि ल नृ जं सु स्य व
५५ ज न नृ व व ॥ ॥ यि त जं वी त सं का र्ण दा ह ण न य म्भू दू ॥ ४ ॥
सि ग्न व र्ण य ५५ त वा लु ग्ग नृ सि न ॥ ॥ व र्णी क मि व सं जा त

य वि य त ॥ ॥ अ वृ म्भ कं म ह तं व व र्ण नि यं वि श ष त ॥ ॥ त्री न
नि जा नी या क्ती य दा ना क र्ण कु या ॥ ४ ॥ ॐ नृ त्वं व म्भू त्वं व
नां सि वि ना क र्ण ॥ ॥ पु ना त्मा द क र्ण यि षा ४ सर्व नृ ष य ५
य द ५५ म्भू षा य त ग्नी य दा नि वि श ष त ॥ ॥ य या ॥ ५५ नृ त्वं व
ति गुं दि व वा र्ण सि ग्गु स र्व ये ॥ ५५ व ग्नी य दं हं नि वि ना
नृ म ति दा नृ नं ॥ ॥ वि दिं ग म ति या के षु ना ग नृ वि त्र क त य
हृ द दां व र्णा र्ण य सर्व षू त व हृ ष व तै ल व र्ण वि ष षा पि

मा श्रीपदानां निवृत्तयः ॥ ॥ विदिं गमदिप ॥ सा सा व म ह न व त ह
वृत्तिगं सकं बु न ह म मृतं विवृत्तं ॥ ॥ ॐ ति नि दान पत्रि कु म
ग्रीय दयि कि लोषिका न ॥ ॥ त्वदकं सां स मे दा ह ह दृष्ट्या मि ह
ज मा श्रिता ॥ ॥ दा खा ग म थं ग मे द्यो लं ज न यं लु कि ना ह रं ॥ ॥ स ह
मृ न त्र शा वं कं वृ तं म ४ ष दि ध म् रु ह ॥ ॥ स वि द् वि वि नि लि ख्या ता
ष दि ध म् रु द ह त ॥ ॥ पृ थ ग्दा ष ४ स म रु म् क रं ना य ह त न
श्री म पि हि त खां तु न क रं स प व क रं ॥ ॥ कृ णा नू ण वा पि